वार्षिक विवरण

1980-81

केन्द्रीय होम्योपैथिक सनुसंधान परिषद
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
(भारत सरकार)

विषय-सूची

क्र० सं०	विषय	पृ० सं०
1.	उद्देश्य तथा लक्ष्य	i
2.	परिचय	ii
3.	शासकीय निकाय	iii
4.	स्थायी वित्तीय सलाहकार समिति	vii
5.	वैज्ञानिक सलाहकार समिति	viii
6.	उप-समितियां	ix
7.	वार्षिक प्रगति विवरण	1
8.	अनुसंधान क्षेत्र	1
9.	नैदानिक चिकित्सा अनुसंधान	2
10.	औषधि परीक्षण अनुसंधान	14
11.	औषधि मानकीकरण अनुसंधान	15
12.	आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान	16
13.	औषधि पौधों का सर्वेक्षण	17
14.	रोग लक्षण सत्यापन अनुसंधान	18

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंसान परिषद् की स्थापना दिनांक 30 मार्च 1978 को 1860 की संस्था धारा 21 के अंतर्गत की गई। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

1. होम्योपैथिक अनुसंधान के लक्ष्यों (उद्देश्यों) और तरीकों की वैज्ञानिक विधियों पर स्थापना।
2. होम्योपैथिक अनुसंधान तथा ऐसे अन्य कार्यक्रम जो कि होम्योपैथी से संबंध रखते हों, कार्यान्वित करना।
3. होम्योपैथी के अंतर्गत अनुसन्धान को प्रोत्साहित करना, अनुसंधान के लिए यथासंभव सहायता प्रदान करना। रोगों की उत्पत्ति के कारणों की, इनके फैलने के तरीकों तथा इनकी रोकथाम के उपायों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
4. होम्योपैथी के अन्तर्गत वैज्ञानिक अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं का विकास करना, विभिन्नताओं में समन्वय स्थापित करना तथा ऐसी संस्थाओं का विकास एवं सहायता करना जो कि मुख्य तौर पर रोगों की उत्पत्ति के कारणों की, उनके रोकथाम के उपायों की तथा उनके औषधि निदान के अनुसंधान में संलग्न हैं।

परिचय

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद वर्ष 1980-81 का विवरण एवं 31 मार्च 1981 को समाप्त होने वाले वर्ष के अकेंक्षित खातों का ब्यौरा इस पुस्तिका में सहर्ष प्रस्तुत करती है ।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद की स्थापना दिनांक 30 मार्च 1978 को संस्था धारा 21 के अंर्तगत की गई । परन्तु यह कुछ समय पूर्व तक अस्तित्व में रहने वाली भारतीय चिकित्सा पद्धति व होम्योपैथी की केन्द्रीय अनुसंधान परिषद के विभाजन के बाद दिनांक 10 जनवरी 1979 को ही संभव हो सका कि परिषद ने स्वतंत्र रूप से कार्य प्रारम्भ किया ।

परिषद के आधीन 28 ईकाइयों द्वारा निर्दिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति की जा रही है ।

योजनाओं का प्रस्तुतीकरण, तकनीकी, मार्गदर्शन, अनुसंधान के विभिन्न तरीकों की व्यवस्थापना तथा उपलब्धियों का मूल्यांकन, शासकीय निकाय द्वारा किया जाता है ।

परिषद के आधीन तकनीकी विभाग, वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सुझावों को कार्य रूप देने का कार्य करता है तथा विभिन्न इकाईयों में किये जा रहे अनुसंधान कार्य की निगरानी करता है ।

शासकीय निकाय

(8 जुलाई 1980 तक)

1. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री	अध्यक्ष
2. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री	उपाध्यक्ष
3. सचिव, अतिरिक्त सचिव, स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार	सदस्य
4. सह सचिव, (होम्योपैथी) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य
5. सह सचिव एवं वित्तिय सलाहकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य
6. डा० जुगल किशोर, सलाहकार (होम्योपैथी) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य
7. डा० दीवान हरीशचन्द, 1, हनुमान रोड, नई दिल्ली ।	सदस्य
8. डा० जे० एन० कांजीलाल, 87, लेनिन सरनी, कलकत्ता ।	सदस्य
9. डा० एम० एल० धावले, 285-ए, फिफथ रोड, चेम्बूर बम्बई ।	सदस्य
10, डा० नागभूषणम, प्रधानाचार्य, जयसूर्या होम्योपैथिक मेडीकल कालेज,, हैदराबाद ।	सदस्य
11. डा० एम० एम० एस० आहुजा, प्रधान, नैदानिक चिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली ।	सदस्य

12. डा० पी० एन० मेहरा, सदस्य
सलाहकार (अनुसंधान)
हिमाचल प्रदेश सरकार,
शिमला 2

13. डा० के० पी० मजुमदार, सदस्य
निदेशक,
नेशनल होम्योपैथिक संस्थान,
कलकत्ता ।

14. डा० एस० पी० सिन्हा. सदस्य
प्रोफेसर आफ फारमेकालोजी
पटना मैडिकल कालेज
पटना

15. डा० पी० एन० वर्मा, सदस्य-सचिव
निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद,
गाजियाबाद ।

शासकीय निकाय

(9 जुलाई, 1980 से)

1. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री

2. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री

3. सचिव/अतिरिक्त सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण

4. सह सचिव, (होम्योपैथी)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार ।

5. सह सचिव एवं वित्तिय सलाहकार,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार ।

6. दिवान हरीशचन्द
हनुमान रोड,
नई दिल्ली ।

7. डा० बी० एम० चक्रवर्ती
डा० सुबल एन० कोले
डाबरा (वेस्ट बंगाल)

8. डा० तिलक राज चड्ढा
104, राजेन्द्र नगर
नई दिल्ली ।

9. डा० एम० कुटुम्बाराव
डा० गुरुराज होम्योपैथी मेडिकल होम्योपैथिक मैडिकल कालेज एवं हस्पताल कालेज एण्ड होस्पिटल
गुडीवाड़ा, पी० ओ० कृष्णा
आन्ध्रा प्रदेश

10. बी० एन० पाल,
रामघाट रोड,
अलीगढ़

11. डा० आर० एस० द्विवेदी
कालेज आफ साइंसेज
बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी
वाराणसी ।

12. डा० डी० एन० प्रसाद,
प्रिंसीपल,
एम० एल० बी० मेडिकल कालेज,
झांसी।

13. प्रोफेसर एस० के० वैश्य
कन्सलटैन्ट, फिजिशियन कार्डियोलाजिस्ट
एस० एस० एल० अस्पताल, बी० एच० यू०,
वाराणसी।

14. डायरेक्टर
नेशनल होम्योपैथिक संस्थान
कलकत्ता।

1. सह सचिव,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।

2. सह सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, — सदस्य
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।

3. डा० जुगल किशोर, — सदस्य
सलाहकार (होम्योपैथी),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।

4. निदेशक, — सदस्य-सचिव
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद,
गाजियाबाद।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति

1. डा० जुगल किशोर, सभापति
सलाहकार (होम्योपैथी)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।

2. डा० दीवान हरीश चंद, सदस्य
1, हनुमान रोड,
नई दिल्ली।

3. डा० जे० एन० कांजीलाल, ,,
87, लेनिन सरनी,
कलकत्ता।

4. डा० के० पी० मुजुमदार, ,,
निदेशक,
नेशनल होम्योपैथिक संस्थान,
कलकत्ता।

5. डा० पी० एन० वर्मा, सदस्य-सचिव
निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद,
गाजियाबाद।

उपरोक्त सदस्यों के अलावा वैज्ञानिक सलाहकार समिति की कार्यसूची की मदो को ध्यान में रखते हुए वि विषयों के विशेषज्ञों को विशेष रूप से आमंत्रित करती है। वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने कुछ उप-समितियों का किया है। परिषद के निदेशक इन समितियों के सदस्य-सचिव हैं। यह समितियां अनुसंधान कार्य की जांच व मूल्य करती हैं तथा सुधार के लिए सुझाव देती हैं। इन उप-समितियों का तथा इनके सदस्यों का विवरण नीचे दिया गया

नैदानिक चिकित्सा अनुसंधान

डा० एम० एल० धावले, ए०, फिफ्थ रोड,
बम्बई।

डा० दीवान हरीशचंद,
1, हनुमान रोड,
नई दिल्ली।
डा० एम० कुटुम्बाराव,
नैदानिक चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
डा० गुरूराजू राजकीय होम्योपैथिक
मेडीकल कालेज,
गुड़ीवाडा।
डा० डी० पी० रस्तोगी,
प्रधानाचार्य,
नेहरू होम्योपैथिक मेडीकल कालेज व अस्पताल,
डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली।

औषधि लक्षण परीक्षण अनुसंधान

डा० जुगल किशोर,
सलाहकार (होम्योपैथी)
स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।
डा० एस० के० नायक,
औषधि लक्षण परीक्षण अनुसंधान इकाई
डी० एन० डी० होम्योपैथिक मेडीकल कालेज
व अस्पताल,
कलकत्ता।
डा० एम० पी० आर्य,
सचिव,
केन्द्रीय होम्योपैथिक परिषद,
जे 1/32, झंडेवालान एक्सटेन्सन,
नई दिक्ली।
डा० आर० के० कपूर,
30, के० पी० कक्कर रोड,
इलाहाबाद।
डा० वी० टी० औगस्टीन,
उप सलाहकार (होम्योपैथी),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संत्रालय,
मारत सरकार, नई दिल्ली।

औषधि मानकीकरण अनुसंधान

डा० के० पी० मुजुमदार०
निदेशक,
नेशनल होम्योपैथिक संस्थान,
कलकत्ता।

डा० जे० एन० तायल,
निवर्तमान निदेशक, केन्द्रीय
भारतीय भेषज संहिता प्रयोगशाला,
राज नगर,
गाजियाबाद।

डा० एन० रामय्या,
परियोजना अधिकारी,
औषधि मानकीकरण अनुसंधान इकाई,
वनस्पति विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद।

डा० पी० एन० वर्मा,
उप-निदेशक,
होम्योपैथिक भेषज संहिता प्रयोगशाला,
गाजियाबाद।

साहित्यक अनुसंधान

डा० जुगल किशोर,
सलाहकार (होम्योपैथी)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार।

डा० के० एन० कासद,
ए० एच० वाडिया बाग,
3/10-परेल टैंक रोड,
बम्बई।

डा० आर० पी० पटेल,
हैनिमैन हाउस, कालेज लेन,
कोट्टायम।

वार्षिक रिपोर्ट
1980-1981

अनुसंधान क्षेत्र

(1) नैदानिक अनुसंधान
(5) औषधि-परीक्षण अनुसंधान
(3) औषधि मानकीकरण अनुसंधान
(4) आयुर्विज्ञान साहित्य संबंधी अनुसंधान
(5) औषधीय पौधों का सर्वेक्षण तथा संग्रह
(6) रोगलक्षण सत्यापन अनुसंधान

(I) नैदानिक अनुसंधान

सौंपी गई परियोजनाओं पर इस अवधि में निम्नलिखित दो तरीकों से नैदानिक अनुसंधान कार्य किया गया :—

(क) औषधि केन्द्रित (ओरिएन्टेड)

(ख) लक्षण-संक्षण (तथा कथित रोग) केन्द्रित

(क) औषधि केन्द्रित :—अध्ययन के लिए निम्नलिखित परियोजनाओं को शुरु किया गया :—

(1) दो कम ज्ञात औषधियों का नैदानिक मूल्यांकन :

जैन्थोजाइलम और विबर्नम ओपुलस का कृच्छार्तव के लक्षण—सम्मिश्र पर :

इस वर्ष प्राथमिक कृच्छार्तव के 35 रोगियों पर प्रयोग लिया गया। सभी अविवाहित और 12 से 24 वर्ष की आयु के थे . गत वर्ष 37 रोगियों का अध्ययन किया गया था—इनमें से 23 को जैन्थोजाइलम और विबर्नम ओपुलस दिया गया और 14 रोगियों को लक्षण संकेतिक औषधियां दी गई थीं। वर्ष 1980-81 के 35 रोगियों के संबंध से सुधार तालिका नीचे दी जा रही है।

क्रम सं०	औषधि	कुल रोगी	सुधार हुआ	सुधार नहीं हुआ	हालत बिगड़ गई
(1)	विबर्नम ओपुलस	15	12	3	—
(2)	जैन्थो जाइलम	20	16	4	—

दोनों औषधियां मूल टिंक्चर के रूप में और 3 X पोटेन्सी के रूप में बार-बार देने पर प्रभावकारी सिद्ध हुई। प्रयोग के दौरान पाया गया कि उपरोक्त दोनों औषधियों का कोई बुरा असर नहीं पड़ा। कुछ ने तो यह बताया कि इसे खाने के बाद लगातार तीन ऋतुस्राव अवधियों के दौरान उन्हें कोई कष्ट नहीं हुआ। चूंकि इसके बाद ये महिलाएं बताने के लिए नहीं आई इसलिए इसके अध्ययन हेतु छह माह की जो अवधि पूर्व निर्धारित थी वह पूरी नहीं हुई। इन दवाइयों के प्रयोग से निम्नलिखित लक्षणों में सुधार हुआ :—

परीक्षण लक्षणों की पुष्टि

1 तंत्रिकीय कृच्छ्रार्तव के साथ साथ तंत्रिकीय शिरोवेदना (13)*

2 अनुस्राव के दौरान तंत्रिकीय दर्द (9) (लगातार तीन ऋतुस्रावों मे रोग लक्षण से मुक्ति)

3 उदर के निचले भाग से लेकर जांघ तक दर्द (17) (दो रोगियों में लगातार तीन ऋतुस्रावों तक दर्द का न होना)

4 उदर के निचले भाग के दर्द में 25 प्रतिशत आराम महसूस होना (4)

5 निम्न उदर में दर्द में 50 प्रतिशत तक सुधार (14)

6 ऋतुस्राव काफी अधिक, जल्द आरम्भ हो जाना (14)

7 गाढ़ा, लगभग काला ऋतुस्राव (14)

8 ऋतुस्राव के दौरान श्वेत प्रदर (2)

अतिरिक्त लक्षणों का निवारण

शिरोवेदना के साथ साथ मचली और वमन (11) (लगातार तीन अवधियों में लक्षण का न होना)

दर्द के साथ-साथ मतली (10)

दर्द के साथ-साथ पूरे शरीर मे कंपकंपी दर्द के साथ-साथ शरीर के तापमान का 100 अंश फा० तक बढ़ना (1)

ऋतुस्राव के बाद श्वेत प्रदर 50 प्रतिशत कम (7)

* प्रत्येक लक्षण के आगे कोष्ठ के अन्दर लिखी गई संख्या से रोगियों की संख्या का पता चलता है।

अधीर रोगी (3)

सामान्यताएं—ठंडे रोगी (26)
गर्म रोगी (20)

0 पतले और नाजुक व्यक्ति (5)

1 कृश व्यक्ति (4)

मिठाई, गरम भोजन, नमक की इच्छा रखने वाले

कम भूख (18)

मनस्कता : भ्रम : अधीरता, व कुछ-कुछ चिड़चिड़ेपन वाला स्वभाव (7)

बर्नम ओपुलस

ऋतुस्राव के दौरान ऐंठन और वृहदांत्र शूल (20) (दो रोगियों में लगातार दो ऋतुस्रावों मे रोग लक्षणों से मुक्ति)।

ऋतुस्राव के साथ शिरोवेदना और अरुचि (5)

ऋतुस्राव के दौरान दर्द 50 प्रतिशत कम (10)

दर्द के साथ-साथ (5)

ऊपर जिन लक्षणों की जांच बारबार की गई है उन्हे निश्चित समझना चाहिए।

इस रिपोर्ट में दर्द की प्रकृति को नहीं बताया गया है क्योंकि इसकी चर्चा रोगी स्वयं नहीं कर सका। दर्द उदर निचले भाग में ही होता था।

उरु तक जाने वाला ऐंठन वाला दर्द (10)

ऋतुस्राव के बाद श्वेत प्रदर 50 प्रतिशत कम (3)

तड़के सवेरे अधिक दर्द (3)

प्रवाह वेदना—वृह् दांत्र-शूल, (कोलिकी) त्रिक (सेक्रम) से जघन क्षेत्र तक (5) (दो रोगियो में 2 ऋतुस्रावो तक लक्षणों से मुक्ति)

गर्म रोगी (12)

ठंडे रोगी (6)

ऋतुस्राव देर से और कम होना (13) (सामान्य बहाव—4 अनुस्रावों तक दो रोगियों में)

मिर्च, मसाले, ठंडे भोजन की इच्छा, मिठाई और सब्जियों के प्रति अरुचि, मनस्कता : अश्रुपूर्ण (10)

चिड़चिड़ः तुनक मिजाज (7)

प्यासे (5)

कम भूख (15)

रोग से पूर्णरूपेण मुक्त होने के लिए दवाइयों की क्षमता का पता लगाने और अतिरिक्त आंकड़ों के लिए अभी कार्य जारी है।

कृमि रोग से सम्बन्धित लक्षण-सम्मिश्र पर फिलिक्स मास (भारतीय स्पीशीज) का नैदानिक मुल्यांकन :

इस अवधि में 32 रोगी लिए गए। सभी 3 से 12 वर्ष की उम्र के थे और उनकी बीमारी एक महीने से लेकर वर्ष पुरानी थी।

(गत वर्ष फिलिक्स मास का प्रयोग 35 रोगियों पर किया गया था)।सभी रोगियों के मल की प्रयोगशाला में जांच बार-बार की गई और खून तथा पेशाब की जांच उपचार के पहले और उपचार के दौरान की गई। रोगियों का सुधार सूचकांक नीचे दर्शाया गया है :—

1) प्रत्येक लक्षण के आगे कोष्ठक के अंदर लिखा गया अंक लक्षणों वाले रोगियों की संख्या दर्शाता है।

कृमि जाति	रोगियों की कुल संख्या	सुधार हुआ	सुधार नहीं हुआ	हालत खराब हो गई	इलाज के लि फिर नहीं आ
1. ऐस्केरिस	18	8	6	—	4
2. ऐन्काइलोस्टोमा ड्युडीनेल (अंकुश कृमि)	2	—	2	—	—
3. टीनिया (फीता कृमि)	2	1	1	—	—
4. अन्य रोगी	10	8	2	—	—

जितने रोगी लिए गए थे वे सभी सोरिक प्रकृति के थे। प्रयोग के दौरान देखा गया कि कम शक्ति की दवा प्रभावकारी रही और दो सप्ताह के अन्दर ही कृमि रोग के लक्षण-सम्मिश्र में सुधार आने लगा। लेकिन यह सुधार सत था जो सिर्फ क्रियात्मक लक्षणों में ही आराम पहुंचा सका। इससे विकृति विज्ञान (पैथोलाजी) में कोई परिवर्तन न हुआ। सिर्फ 3 रोगियों में कृमि (गोल कृमि) बाहर निकले।

प्रकृति, सामान्यताओं आदि की दृष्टि से इस औषधि की पूरी सही तस्वीर के लिए और अधिक रोगियों (कम कम 300) पर ये प्रयोग होने चाहिए। इसके लिए यह कार्य अभी जारी है।

3. विविध रोगियों पर आंत्र—नोसोड का नैदानिक मूल्यांकन

इस अवधि में नैदानिक परियोजना के अधीन 29 रोगी लिए गए। पुस्तकों में वर्णित चिह्न और लक्षण-विज्ञ के आधार पर उन्हें दवाइयां दी गई। सुधार सूचकांक नीचे दर्शाए गए हैं :

परीक्षण वाली विविध औषधियों से संबंधित सुधार तालिकाएं :—

औषधि	कुल रोगी	सुधार	कोई सुधार नहीं	न बतलाने व
मोरगन ग्रट	5	2	1	2
डाइसेन्टरी को०	17	8	4	5
साइकोटिक को०	5	4	1	—
प्रोटियस	2	1	—	1

जिन लक्षणों के आधार पर दवाई दी गई और प्रभावकारी पाई गई :—

लक्षण जिनके आधार पर दवाई दी गई	**प्रयोग के दौरान लक्षणों में सुधार**
डाइसेन्टरी को०	
1. वमन द्वारा उदर में दर्द (11)	उदर का दर्द समाप्त हो गया (10)
2 उदर में दर्द, सुनने से (6)	समाप्त हो गया (4)
3. बार-बार पतली टट्टी दिन में 5-6 बार (5) चिंता से प्रवाहित (डायरिया) (5)	सुधार (7)
4. इच्छाएं : दूध, नमक, वसा की (10)	कोई परिवर्तन नहीं
5. शारीरिक और मानसिक बेचैनी (5)	बेचैनी (3)
6. भयपूर्ण अधीरता वाला तनाव (2)	अधीरता वाले तनाव में सुधार (1)

साइकोटिक को०	
1. अकेला होने का डर, कुत्तों से डर (1)	लक्षणों से मुक्ति (1)
2. ओंठ सूखे, मुख कोण में फटाव (मुख कोण पर दरारें) (2)	दरारों में सुधार (2)
3. इच्छा : मक्खन, वसा, दूध की (2)	इच्छा में कोई परिवर्तन नहीं
4. भोजन (खाद्य सामग्री) के गंध से मचली (2)	मचली में सुधार (2)
5. उथला, अरक्तक व सूजा चेहरा (2)	अरक्तता में सुधार (2)
6. चिड़चिड़ा	चिड़चिड़ेपन में सुधार
7. ऋतुस्राव के दौरान बायीं तरफ की शिरोवेदना। शोर से सिर दर्द	शिरोवेदना में सुधार
8. अधिक आकर्षी खांसी, साथ में कष्ट-श्वास। दो बजे रात में (2)	खांसी के साथ कष्ट श्वास (डिस्नियां (2)
मारगन गेर्टनर	
1. अधीरतापूर्ण तनाव (1)	अधीरतापूर्ण तनाव में सुधार
2. मुख का स्वाद कड़ुवा (2)	मुख के कड़ुवे स्वाद में सुधार (2)
3. इच्छा : मिठाई, नमक, गरम भोजन, वसा, अण्डा (2)	कोई परिवर्तन नहीं
4. अधिजठर में दर्द, वमन, अपराह्न में (2)	दर्द समाप्त (2)
5. चिड़चिड़ी प्रकृति का, रोने वाला (3)	चिड़चिड़ेपन में सुधार (2)
6. संगी साथियों से दूर रहना (2)	संगीसाथियों से दूर (2)
7. रात में लार बहना (1)	लार बहने में सुधार
प्रोटियस	
1. किसी के विरोध करने पर गुस्से से बरस पड़ना (2)	सुधार (2)
2. खाने के बाद भूख के कारण हुए दर्द में आराम न मिलना (1)	इसमें आराम (1)
3. (पेट में) कब्ज (2)	कब्ज में सुधार (2) टट्टी का नियति होना
4. (छाती में) दर्द, ठंड लगने के कारण (2)	छाती के दर्द में आराम (2)

अध्ययन के दौरान यह पता चला कि ये दवाइयां—जठरांत्र की बीमारियों (गड़बड़ी) पर प्रभाव डालती है और इनकी कुछ मानसिक तथा शारीरिक सामान्यताएं हैं।

औषधियों की इन सामान्यताओं की पुष्टि के लिए प्रत्येक औषधि का प्रयोग अधिक रोगियों पर करना पड़ेगा।

---

1. प्रत्येक लक्षण के आगे कोष्ठक में लिखी संख्याएं रोगियों की संख्या का पता चलता है।

4. होम्योपैथिक विधि से शक्तिकृत इन्सुलिन का मधुमेह पर नैदानिक परीक्षण

"होम्योपैथिक विधि से शक्तिकृत इन्सुलिन का अतिशर्करारक्तक (हाइपर ग्लाईसीमिक) व्यक्तियों पर क
प्रभाव पड़ता है—" यह जानने के लिए इस वर्ष नियंत्रित नैदानिक परीक्षण किया गया। 19 ऐसे रोगियों को लिया ग
जिनके शरीर में रुधिर-शर्करा स्तर आहार पूर्व और आहार पश्च दोनों ही अवस्थाओं में सामान्य से अधिक था। स
रोगी मध्यावस्था और अधिक उम्र के ही थे और सभी पिछले 2 से 15 वर्षों से रोग से पीड़ित थे।

इन सभी (19) रोगियों को दो समूहों—समूह 'ए' और समूह 'बी' में रखा गया। समूह 'ए' में उन लोगों
रखा गया जिनका रुधिर शर्करा—स्तर (बी० एस० एल०) आहार पश्च अवस्था में सामान्य से अधिक लेकिन आहार
अवस्था में सामान्य सीमा में ही था। समूह 'बी' वाले रोगियों का रुधिर-शर्करास्तर दोनों ही अवस्थाओं में सामा
से ज्यादा था और ये सभी पहले से ही मधुमेह रोधी अंग्रेजी दवाइयां (एलोपैथिक) ले रहे थे।

समूह 'ए'

इस समूह के दो रोगियों (1 और 2) के परिणाम इस प्रकार हैं :

1. रोगी संख्या 1 को दूसरे माह रुधिर शर्करा स्तर (पी०) सामान्य था और यह निरीक्षणाधीन है। रुधिर-शर्क
स्तर को कम करके सामान्य स्तर पर ला देने के बावजूद भी इसके लक्षण में कोई सुधार नहीं पाया।
2. रोगी संख्या 2 का रुधिर-शर्करास्तर चौथे और छठे महीने में सामान्य था। इसमें रुधिर-शर्करास्तर कम
के साथ-साथ सुधार देखा गया।

समूह 'बी'

17 रोगियों के परिणामों का विश्लेषण इस प्रकार है :

1. एक रोगी (2) में इन्सुलिन से कोई फायदा नहीं था लेकिन बताई गई दवाई आर्सनिक एल्ब० 50 मि
सिमल शक्ति से फायदा हुआ। सांस लेने की कठिनाई वाले और अतिशर्करारक्तता वाले दोनों ही रोगियों
इस दवा से सुधार हुआ।
2. दो रोगियों (9, 13) में रुधिर-शर्करास्तर क्रमशः 8वें और पहले माह में सामान्य स्तर पर आ गया ले
9 नम्बर रोगी के लक्षणों में सुधार नहीं हुआ।
3. छह रोगियों (1, 6, 7, 8, 11, 15) में रुधिर शर्करा स्तर नीचे आ गया और लक्षणों में भी सुधार हुआ
4. दो रोगियों (3, 12) के रुधिर शर्करा स्तर में बढ़ोतरी हुई। इस रोगी के लक्षणों में कोई परिवर्तन न
देखा गया।
5. पांच रोगियों (4, 5, 10, 16, 17) ने नैदानिक प्रयोग के दौरान आना बन्द कर दिया इसलिए इनके परिणा
का ठीक तरह से पता न चल सका।
6. एक रोगी (14) जो इस परीक्षण के पूर्व अपरिष्कृत इन्सुलिन ले रहा था उसे शक्तिकृत इन्सुलिन से क
फायदा नहीं हुआ, बल्कि उसका रुधिर-शर्करास्तर (बी० एस० एल०) पहले से और बढ़ गया।

सभी रोगी सोरिक प्रकृति के थे। परीक्षण के दौरान यह देखा गया कि शक्तिकृत इन्सुलिन में निम्नलिखित लक्षण
को दूर करने की कुछ क्षमता निश्चित रूप से है :—

शीर्ष

चक्कर : गतिशील अवस्था में (2)

नेत्र : ठंडी चीजों के प्रयोग से आंखों में जलन का कम हो जाना

श्वसन : श्वास लेने में कठिनाई, थकावट के बाद इसका बढ़ जाना (2)
सीढ़ियां चढ़ने से इसमें तेज़ी (2)*

सीने के बायीं तरफ दर्द

हृदय : अधिक धड़कन (2)
हृदय की पहली ध्वनि कम

उदर : आध्मान (फ्लैचुलेन्स) गैस पास करने के बाद उदर का फूल जाना (2) उदर में गुड़गुड़ाहट

आमाशय : अम्लता, मल से खट्टी गंध, मुख का स्वाद खट्टा।

मलाशय (रेक्टम), मल : खूनी बवासीर

शाखाएं (एक्सट्रीमीटीज़) : अंस संधियों में दर्द, बेचैनी के साथ-साथ दर्द। रात में दर्द और बेचैनी तथा दायें हाथ की अंगुलियों का कड़ा हो जाना। हथेलियों और तलवे में जलन। पैरों में तेज दर्द। जोड़ों में सूजन।

त्वचा : सम्पूर्ण शरीर पर पित्तियों (अर्टिकेरिया) की तरह के स्फोट (इरप्शंस), लेकिन निम्न शाखाओं में अधिक होना। खुजली के साथ-साथ त्वचा का विशल्कन (डेसक्वैमेशन) (2) परिनख शोथ (पैरोनिकिया) तथा अधिनख (एपोनिकिया) पूरे शरीर पर पिटिकीय स्फोटों के साथ में खुजली।

निद्रा : बिना किसी कारण के अनिद्रा (नींद न आना)

मूत्र : पेशाब करने की बारंबार पेशाब जाने की आवश्यकता।

सामान्यताएं : सब तरह से स्वस्थ महसूस करने के साथ कमजोरी दूर हो गई

परीक्षण के दौरान यह देखा गया कि उच्चतर शक्ति की अपेक्षा दवा 30 शक्ति (पोटेन्सी) में प्रभावकारी हैं और इस दवा का कोई बुरा असर नहीं पड़ा। इस दवा में रुधिर-शर्करास्तर कम करने की क्षमता तो है लेकिन उस हद तक और उतना जल्दी नहीं जितना अपरिष्कृत (क्रूड) इन्सुलिन में है। अतिग्लूकोजरक्तता (हाइपरग्लाइसीमिया) वाले रोगी में इस दवा की क्रिया अधिक होती है और इस विषय पर अभी कार्य चल रहा है।

परीक्षणाधीन सभी रोगियों में रुधिर-शर्करा-स्तर का पता फोलिन और वू विधि से लगाया गया। यह कार्य उप-चार के पहले और उपचार के दौरान एक-एक महीने के अंतराल में या जैसे ही सुधार नजर आने लगा किया गया।

(क) लक्षण-संलक्षण (तथाकथित रोग) केंद्रित

(1) अतिरिक्त दाब (हाइपरटेंशन) से सम्बद्ध लक्षण—संम्मिश्र पर होमियोपैथिक दवाइयों का असर :

इस अवधि में अतिरिक्त दाब के रोगियों के न मिलने के कारण इस परियोजना पर कार्य नहीं हो सका।

2. नासाशोथों (राइनाइटीज) के लक्षण-संम्मिश्र पर होम्योपैथिक दवाइयों का असर :

इस अवधि में इस परियोजना पर भी कार्य किया गया। परीक्षण के लिए 325 रोगी लिए गए जिनमें से 12 लक्षणहीन थे, 77 रोगियों में काफी सुधार हुआ, 110 में थोड़ा सुधार हुआ, 4 रोगियों में कोई लाभ नहीं हुआ, बतलाने के लिए बाद में 119 रोगी नहीं आए और 3 रोगी अभी निरीक्षणाधीन हैं।

---

* लक्षणों के सामने लिखी गई संख्या से उन रोगियों का पता चलता है जिनमें सुधार हुआ।

इसके लिए उपयोगी और प्रभावकारी औषधियां निम्नलिखित है :—

एकानाइट नैप, आर्सेनिक एल्ब, एलियम सीपा, एसिड नाइट्रिकम, अमोनियम कार्बोनिकम, ब्रायोनिया, बेराइटा कार्ब, कैल्केरिया कार्ब, यूफ्रेसिया, हेपर सल्फ, काली म्यूरिएटिकम, काली सल्फ्युरिकम, लाइकोपोडियम, लेमना माइनर, मर्क्यूरियस, पल्सेटिला, सल्फर, साइलीशिया, सैबेडिला, ट्यूबरकुलिनिम, थूजा, वाइथेनिया सोमनिफेरा।

इस परियोजना पर कार्य जारी है।

3. **वायुविवरशोथ (साइनुसाइटिस) के लक्षण-सम्मिश्र के उपचार के लिए होमियोपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस अवधि में कुल 81 रोगी लिए गए जिनमें से 2 रोगमुक्त हो गए, 20 में काफी सुधार हुआ, 21 में थोड़ा सुधार हुआ, 5 को कोई फायदा नहीं हुआ। 29 रोगी बाद में बतलाने के लिए नहीं आए और चार अभी निरीक्षणाधीन हैं।

अध्ययन के दौरान निम्नलिखित दवाइयों का प्रयोग किया गया जिनसे लक्षणों की उग्रता में कमी रोग की अवधि और रोग के पुनरावर्तन के साथ-साथ संबद्ध लक्षणों—जैसे शिरोवेदना, चक्कर आना, आंखों में भारीपन, कम सुनना, मचली आदि में लाभ हुआ। प्रयुक्त दवाइयां ये थीं :—

आर्सेनिक्म एल्बम, बैलडोना, ब्रायोनिया एल्वा, केलकेरिया कार्ब, केलकेरिया सल्फ्यूरीकम, हिपर सल्फर, काली बाई क्रोमिकम, लेगना माइनर, लेकेसिस, लाइकोपोडिमय, मर्क्यूटियस, नेट्रम म्यूरिएटिकम, नक्स वोमिका सेन्गुनेरिया केनाडेन्सिस, साईलीशिया, सटिक्टा पल्मोनेरिया, स्पोन्जिया, ट्यूबरकुलिनम (बोवाईनम्)।

4. **टांसिलशोथ (गलतुंडिका शोथ के लक्षण संम्मिश्र के उपचार में होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस अवधि में 150 रोगी इस रोग के लिए आए, जिनमें से 12 लक्षण मुक्त थे, 51 में काफी सुधार हुआ, को थोड़ा लाभ पहुंचा, 5 को कोई फायदा नहीं हुआ, 49 रोगी बाद में बतलाने नहीं आए और 9 अभी निरीक्षणाधीन हैं।

आमतौर पर ये सभों रोगी मिलेजुले मियाज्म वाले थे और इनमें गुलिकीय वाली पर साई कोसिस की प्रबलता थी। व्यवहृत और लाभप्रद दवाइयां निम्नलिखित थीं :—

आर्सेनिक्म एल्बम, ब्राइटा कार्ब, बेलाडोना, केलकेरिया कार्बोनिकम, मर्क्यूरियस बिन आयोडेटम् नेट्रमम्यूरि टिकम्, नेट्रम सल्फ्युरिकम, साइलीशिया, सल्फर आयोडेटम, फैरम फोस। बीच-बीच में ट्यूबरकुलिनम त वैसीलीनम जैसे नोसोड देने से काफी फायदा रहा। इन दवाइयों से रोग पुनरावर्तन और उग्रता की अ को कम करने में काफी सहायता मिली।

5. **विविध प्रकार के चर्म-रोगों (एलर्जी सहित) में होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस अवधि में त्वचा रोग से पीड़ित 433 रोगी लिए गए। इनमें से 79 रोगी रोग लक्षणमुक्त हो गए, 63 काफी फायदा हुआ, 127 रोगियों को मामूली लाभ हुआ। 1 रोगी की हालत बिगड़ गई, 27 रोगियों में (ब फायदा नहीं हुआ और 126 रोगी बाद में बतलाने नहीं आए (या दवा लेने नहीं आए) और 10 का अभी इलाज रहा है।

6. **श्वसनिका-दमा के लक्षण-सम्मिश्र में होमियोपैथिक दवाओं की भूमिका**

इस अवधि में 1, 308 रोगी लिए गए। इनमें से 299 को काफी फायदा पहुंचा, 684 को इनसे थोड़ा ब

125 को कोई लाभ नहीं, 35 की हालत बिगड़ गई, 62 रोगी बाद में बतलाने नहीं आए और 202 रोगियों का अभी उपचार जारी है। उपचार के बाद लोहितकोशिका अवसादन दर (इ० एस० आर०) और इओसिन रोगी कोशिकाओं (इओसिनोफिल) का प्रतिशत कम होकर सामान्य या सामान्य के लगभग पहुंच गया।

इस रोग में व्यवहृत दवाइयां ये थीं :

आर्सें एल्बम, एन्टीमोनियम टार्टारिकम, ब्लैटा ओरिएंटलिस्ट, बेसिलिनम, कास्टिकम, कार्बो वेजिटेबिलिस, कैक्टस ग्रान्डीफ्लोरा, काली कार्ब, ड्रोसेरा, इपिकाकुआना, काली कार्बोनिकम, काली बाईक्रोमिक, मेडोराईनम नैट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, सोराइनम, पोथोस फिटिडा, पल्सेटिला, फास्फोरस, सल्फर, सलफ्यूरिक एसिड, थ्यूजा, ट्यूबरकुलिनम।

सभी में सोरा और साइकोटिक मियाजम की प्रबलता थी और अधिकांश रोगियों में पहले गुलिकीय मियाज्म था।

यह देखा गया कि बताई गई दवाइयों से कष्ट श्वास (डिस्निया) के तीव्र प्रवेग का अच्छी तरह से नियंत्रण किया गया।

अभी कार्य जारी है।

7. **रुमेटिकज्वर (आमवात ज्वर) संधिशोथ के लक्षण संम्मिश्र में होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

आमवात ज्वर 1 संधिशोथ का उपचार 1980-81 में जारी रहा। इसके लिए 47 रोगी थे जिनमें से एक को काफी फायदा हुआ, 45 में थोड़ा सुधार और 1 रोगी बाद में आया नहीं।

औरतों की अपेक्षा मर्दों में यह रोग थोड़ा अधिक देखा गया और अधिकांश रोगी 10-19 वर्ष की आयु के थे। इनमें सोरा और साइकोसिस मियाज्म की प्रबलता थी। निम्नलिखित औषधियां लाभप्रद सिद्ध हुई :—

ब्रायोनिया एल्बम, कैल्मिया लैटिफोलिया, आर्सेनिकम एलबम, लीडम पाल, लाइकोपोडियम, रस टाक्सी-कोडेन्ड्रान, आर्निका, पल्सेटिला, मर्क साल, कोलचिकम, लेकेसिस, एपिस मेलेफिका, काली सल्फ, कैमोमिला, डिजिटेलिस, कालीबाईक्रोमिकम, चेलिडोनियम, थ्यूजा, सल्फर, कल्केरिया कार्ब, नेट्रम म्यूर, मेडोरानम और सोराइनम।

निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए और अधिक रोगियों पर प्रयोग करना आवश्यक है। अभी इस पर कार्य चल रहा है।

8. **मानसिक रोगों के लक्षण-सम्मिश्र में होम्योपैथिक दवाओं की भूमिका**

मानसिक रोगों पर इस वर्ष भी काम हुआ। यह योग विखंडित मनस्कता, चिता विक्षिप्ति, उन्माद, जवानी के दिनों में (20 से 40 वर्ष तक के लोगों में) और अधिकांश मर्दों में देखा गया। कुल 307 रोगी 1980-81 में लिए गए। इनमें से 88 को 50 प्रतिशत या अधिक फायदा हुआ और 122 रोगियों में 25 प्रतिशत फायदा, 48 रोगियों में कोई लाभ नहीं, 4 रोगियों की हालत बिगड़ गई और 45 रोगी बाद में उपचार के लिए नहीं आए।

विवाहित लोगों में मानसिक रोग अधिक देखा गया। अकुशल कार्यकर्ता इस रोग से अधिक पीड़ित होते हैं अधिकांश रोगी पैरानाइड समूह यानी हैनीमैन के वर्गीकरण के अनुसार श्रेणी तीन के थे। सोरा और साइकोसिस मियाज्म अधिक प्रबल देखा गया। लाभप्रद दवाईयां निम्नलिखित थीं :—

बेलाडोना, जेल्सीमियम, हायोसयामस, ईग्नैशिया, कैनाबिस इंडिका, फास्फोरस, पल्सेटिला, स्टैफिसेग्रिया, सल्फर, ओपियम, मर्क्यूरियस सोलुबिलिस, लेकेसिस, वेरेट्रम एल्बम और कास्टिकम।

यह कार्य जारी है।

9. **मधुमेह के लक्षण-संम्मिश्र में विभिन्न पुस्तकों में वर्णित होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस अवधि में 80 रोगी लिए गए। इनमें से 33 को थोड़ा फायदा हुआ, 16 को कुछ भी फायदा नहीं हु
...हालत बिगड़ गई, 13 पर अभी परीक्षण कार्य जारी है और 15 रोगी उपचार छोड़ गए।
मधुमेह रोग अधिकांशतया अधिक उम्र (यानी 40 और इससे अधिक आयु के लोगों में अधिक देखा गया।
में शर्करा के स्तर (आहार पूर्व और आहार पश्च अवस्था) और मूत्र में शर्करा स्तर को कम करने और अन्य उपद्र
नियंत्रण करने में निम्नलिखित दवाइयां प्रभावकारी सिद्ध हुईं :—
सल्फर, एसिड फास, फास्फोरस और टैरेन्टुला।
इस विषय पर कार्य चल रहा है।

10. **खल्वाटता (एलोपेसिया) के लक्षण-संम्मिश्र के उपचार में होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस वर्ष 19 रोगी इस रोग के लिए चुने गए। इनमें से 1 में काफी सुधार हुआ, 4 में थोड़ा सुधार, 7 रोगि
में कोई सुधार नहीं और 7 रोगी उपचार के लिए फिर नहीं आए।
इस रोग में निम्नलिखित दवाइयां प्रभावकारी सिद्ध हुईं :—
एसिड फास, फ्लोरिक एसिड, लाइकोपोडियम, नेट्रम म्यूर, फास्फोरस और विन्का माइनर।
इसके उत्तेजक कारक थे :—सेबोरिया, चर्म रोग, विक्षिप्ति (न्यरोसिस) वगैरह।
इस परियोजना पर कार्य चल रहा है।

11. **गर्भाशय ग्रीवा शोथ गर्भाशय ग्रीवा अपरदन**

आमतौर पर काफी औरतों को होने वाली इस समस्या पर एक क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान में अनुसंधान
हुआ। 16 रोगियों से आंकड़े एकत्र किए गए लेकिन इनमें से 2 रोगियों में काफी सुधार हुआ और 10 रोगियों में
सुधार हुआ, 2 में कोई लाभ नहीं हुआ, 1 रोगी फिर आया नहीं और एक रोगी पर अभी कार्य चल रहा है।
यह निष्कर्ष निकला कि 21-40 वर्ष की महिलाओं में विशेष रूप से इस रोग के होने की सम्भावना रहती
पल्साटिला, कैन्थेरिस और सीपिया इसमें लाभदायक सिद्ध हुईं।

12. **मध्यकर्णशोथ के लक्षण-संम्मिश्र में होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस अवधि में 71 रोगी लिए गए। इनमें से छह लक्षणमुक्त हो गए, 11 में काफी फायदा हुआ, 15 को
फायदा पहुंचा, 12 को कोई फायदा नहीं हुआ और 25 रोगी बाद में फिर नहीं आए और दो अभी निरीक्षणाधीन
हेपर सल्फ, साइलीशिया, पल्स, मर्क साल और टेल्युरियम नामक दवाइयां इसमें लाभदायक पाई गईं।

13. **सौरियासिस**

इस रिपोर्ट की अवधि में इस समस्या पर भी काम किया गया। इस रोग के सिर्फ दो रोगी मिले। दोनों
थोड़ा लाभ हुआ। दोनों ही महिलाएं थीं।
किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए और अधिक रोगियों का अध्ययन आवश्यक है। यह कार्य अभी जारी है।

14. **चर्मकील और घट्टा (वार्ट्स और कार्न्स)**

प्रयोग के लिए 24 रोगियों को लिया जा सका जिनमें से तीन रोगियों को काफी फायदा पहुंचा, 9 को
फायदा और 7 रोगी फिर आए नहीं और 5 अभी निरीक्षणाधीन हैं। अधिकांश को थूजा से ही फायदा हुआ।
इस परियोजना पर कार्य चल रहा है।

15. **मलेरिया**

इस अवधि में मलेरिया पर भी काम हुआ क्योकि आज जन-स्वास्थ्य को इस रोग से काफी खतरा हो गया है।
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के चार नैदानिक अनुसंधान एककों में मलेरिया के 97 रोगियों का अध्ययन
किया गया है। इनमें से 25 रोगी लक्षण मुक्त हो गए। 1 रोगी में काफी सुधार हुआ, 12 रोगियों में थोड़ा बहुत
सुधार हुआ, 6 रोगियों को कोई फायदा नहीं हुआ और 49 रोगियों ने पुनः आना बन्द कर दिया।
यह पाया गया कि आर्सेनिकम एल्बम, चाइना, सल्फर, चाइना आर्स०, यूपेटोरियम पर्फोलिएटम, सिना और
पल्सेटिला जैसी दवाइयां मलेरिया का नियन्त्रण कर सकती हैं और बार-बार होने वाले इसके आक्रमण को कम कर
सकती हैं।
किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए और अधिक रोगियों का अध्ययन आवश्यक है इसलिए अभी इस पर
कार्य चल रहा है।

16. **फाइलेरिया रोग**

इसके लिए इस अवधि में तीन एककों में 479 रोगियों का नैदानिक अनुसंधान कार्य किया गया। इनमें से आठ
रोग मुक्त हो गए, 17 रोगियों में काफी सुधार हुआ, 109 रोगियों में थोड़ा बहुत सुधार (50 से 75 प्रतिशत) हुआ,
104 रोगियों में थोड़ा लाभ (25 प्रतिशत से कम) हुआ, 41 रोगियों को कोई फायदा नहीं हुआ, 7 की स्थिति और
बिगड़ गई और 193 रोगी फिर आए नहीं।
लाभप्रद दवाइयां ये थीं :— रस टाक्स, ब्रायोनिया, पल्साटिला, रोडोडेन्ड्रोन, हाइड्रोकोटाइल, मेडोराईनम,
लाइकोपोडिय सीपिया।
सल्फर नेट्रम म्यूर आदि। अभी इस पर कार्य चल रहा है।

17. **अस्थि संधि शोथ (आस्टिओ—आर्थ्राइटिस)**

परिषद् की एक पूछताछ के अधीन इस समस्या पर भी जनवरी, 1981 से काम शुरु हुआ। कुल 72 रोगियों
का अध्ययन किया गया। इनमें से 17 में काफी सुधार, 20 में थोड़ा बहुत सुधार, 6 में कोई सुधार नहीं, 24 पुनः नहीं
आए और तीन पर अभी कार्य चल रहा है।
40 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में इस रोग की व्यापकता ज्यादा देखी गई। लाभप्रद औषधियां ये हैं :—
...टिमनी क्रुडम, आर्निका मोन्टना, बेसिलिनम, ब्रायोनिया एल्बा, केलकेरिया कार्बोनिकम, कारसिनोजेन, इग्नेशिया,
...लमिया, लाइकोपोडियम, पल्साटिला, रस टाक्स।
सभी में साइकोसिस मियाज्म पूर्व प्रबल था। अभी इस पर कार्य चल रहा है।

18. **उग्र श्वसन रोगों के लक्षण-समूहों की व्यवस्था में होम्योपैथिक दवाइयों की भूमिका**

इस अवधि में 110 केसों, जो विविध प्रकार के तीव्र श्वसन रोगों, जैसे नासा शोथ, वायु विवरशोथ, स्वरयंत्र
...थ, (लैरिनजाइटिस), सर्दी-जुकाम, इन्फ्लुएंजा और श्वसनिका शोथ से पीड़ित थे—के आंकड़े एकत्र किए गए। इनमें
80 लक्षण मुक्त थे, 16 में काफी फायदा हुआ, 5 में थोड़ा बहुत सुधार, 9 रोगी उपचार हेतु फिर नहीं आए। 40
...तिशत रोगियों में यक्ष्मा (ट्यूबरकुलोसिस) बीमारी पहले से थी।
रोग की उग्रता का नियन्त्रण करने में निम्नलिखित औषधियां लाभकारी थीं :—
बेलाडोना, बेराइटा कार्ब, ब्रायोनिया एल्बा०, फेरम फोस, सल्फर, हाइड्रासटिस कैनाडेन्सिस, काली बाईक्रोमिकम, फाइटोलाका,
...ली म्यूरियेटिकम, लेकेसिस, नेट्रम म्यूरियटिकम, नाइट्रिक एसिड, नक्स वोमिका, मर्क्यूरियस सोलुबिलिस,
...साटिला।

19. ग्रसनी शोथ

इस अवधि में इस योजना पर कार्य जारी रहा और 19 रोगियों का अध्ययन किया गया जिसमें से 4 रोगियों काफी सुधार हुआ 8 रोगियों मे थोड़ा सुधार हुआ तथा 7 रोगी पुनः नहीं आए।

इनमें सोरा मियाज्म प्रबल था ; प्रभावकारी औषधियां थीं :—चैलाडौना, बैरायटा कार्ब, ब्रायोनिया, फेरम फ हेपर सल्फ, हाइड्रेस्टिस, कैनाडेनसिस, काली ब्राईक्रोमिकम, काली म्यूर, लैकेसिस, नैट्रम म्यूर, नाइट्रिक एसिड, वोमिका, मर्क्युरिस साल्युविलिस, फाइटोलाका और पल्ससेटिला।

20. कनफेड (भम्परा)

इस वर्ष 17 रोगियों का अध्ययन किया गया। सभी कच्ची उम्र के थे। 7 मर्द और 4 महिलाएं। सभी 5- वर्ष के भीतर थे और सभी रोगियों पर 4-15 दिन तक परीक्षण कार्य किया गया। इसमें लाभप्रद (प्रभावकारी) दवा मक्यूरियस और बेलाडोना 30 और 200 शक्ति की थीं। अभी इस पर कार्य चल रहा है।

21. संक्रामी यकृत शोथ (इनफेक्टिव हेपेटाइटिस)

9 रोगियों पर परीक्षण हुआ और सभी 5-25 दिन के उपचार के पश्चात् ठीक हो गए। 9 में से 6 पुरुष 3 महिलाएं थीं।

प्रभावकारी औषधियां नेट्रम सल्फ और चाइना 30 और 200 शक्ति की थीं।

22. परिसर्पसय (हरपीज)

इस अवधि में 17 रोगियों पर परीक्षण कार्य किया गया। सभी 4-8 दिनों में स्वस्थ हो गए। 17 में से पुरुष और 5 महिलाएं थीं।

प्रभावकारी औषधियां ये थीं :—आर्सनिकम एल्बम, सीपिया और रैननकुलस बल्बोसस, 30 और शक्ति की।

23. अमीबारुग्णता (अमीबिएसिस)

अमीबी पेचिश के 24 रोगियों का इस अवधि में परीक्षण किया गया। 8 रोग मुक्त हो गए, 6 में काफी सु हुआ, 3 में थोड़ा बहुत सुधार और 7 पुनः नहीं आए। अधिकांशतः अतिस्ता इंडिका (एटिस्टा इन्डिका) नेट्रम म्यूरिटि फास्फोरस, नक्स वोमिका नामक औषधियों का प्रयोग किया गया। 16 में ट्यूबरकुलर मियाज्म ही इस रोग का का था। इस पर अभी कार्य चल रहा है।

24. जननक्षमतारोध (एन्टिफर्टिलिटी) :

इस अवधि में पल्सेटिला नाइग्रा और कालोफाइलम नामक औषधियों पर प्रायोगिक अनुसंधान किया गया त यह पता चल सके कि इनमें जनन क्षमता को रोकने की कितनी शक्ति है। इन दो औषधियों के अतिरिक्त इस प्रकार अध्ययन निम्नलिखित औषधियों पर भी किए गए :—

डाइक्लोरेफेनाक्सी एसेटिक एसिड और नेट्रम म्यूरिएटिकम। इस प्रकार के अध्ययन विभिन्न शक्ति (पीटेन्सियो) द्वारा सफेद चूहों पर किए गए।

डाइक्लोरोफेनोक्सी एसिटिक एसिड संबंधी अध्ययन किया जाना चाहिए क्योंकि इसमें प्रोजेस्टेरोन उत्पन्न क वाले गुण होते हैं।

ऐसी औषधियों पर अभी प्रयोग चल रहा है।

25. ट्यूबरकुलिनम का रोगलक्षणी परीक्षण

इस प्रयोग के लिए इस अवधि में 30 रोगी लिए गए। इनमें से 17 का मध्यवर्ती उपचार किया गया और 13 का प्रारम्भिक उपचार किया गया। अब तक के प्राप्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि जब रोगियों की पिछली बीमारियों और बार बार जुकाम होने, टीनिया का संक्रमण, जिआर्डिया रोग, सामान्य पनसिका (एक्ने वग्लेरिस), प्राथमिक श्विन्न (विटिलिगो), चिरकारी नेत्र श्लेष्माशोथ (कानजंकटिवाइटिस), स्तवक वृक्कशोथ (ग्लोमेरुलर नेफ्राइटिस), बढ़े हुए पुरस्थ (प्रोस्टेट), गले का संक्रमण, गुलिकीय लसीकापर्वशोथ (ट्यूबरकुलर लिम्फएडेनाइटिस) सरीखे मुख्य रोगों के प्रति इसकी बंधुता के आधार ट्यूबरकुलिनम दिया गया तो इनकी मुख्य शिकायतों में काफी सुधार हुआ और इसके साथ-साथ अन्य संबद्ध गड़बड़ियों में भी लाभ हुआ। जिन लोगों को पहले खारा (मीजल्स), छोटी माता (चिकन पाक्स), कृमि रोग, पीलिया, टाइफाइड, यक्ष्मा, कनफेड, पुनरावर्ती खांसी और जुकाम आदि बीमारियां हुई हो उन लोगों को इससे दवा काफी लाभ मिलता है। प्रयोग से यह भी पता चला कि जिन रोगियों के पारिवारिक इतिहास में यक्ष्मा, अतिरिक्त दाब, दमा, संधिशोथ, अतिअम्लता (हाइपरएसिडिटी) शामिल है उनके लिए ट्यूबरकुलिनम प्रभावकारी है। तापमान के प्रति रोगियों की प्रतिक्रिया को इस प्रयोग के दौरान इस प्रकार नोट किया गया :—20 रोगी (गर्म), 7 रोगी (ठंडे) और 3 रोगी उभयतोषो (एम्बि थर्मल) थे।

(II) औषधि परीक्षण अनुसंधान

इस अवधि में औषधि परीक्षण से संबंधित अनुसंधान भी किया गया। प्रूविंग के लिए डबल ब्लाइन्ड टेक् अपनाई गई। संकेतयुक्त (कोडेड) औषधियां एककों व संस्थानों में परीक्षण के लिए भेजी गई।

पांचवां औषधि परीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम भागलपुर और कलकत्ता के औषधि परीक्षण अनुसंधान एककों चलाया गया। छठा औषधि परीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम उपरोक्त दोनों एककों के अतिरिक्त क्षेत्रीय अनुसंधान सं (आर० आर० आई०), नई दिल्ली में भी चलाया गया। गाजियाबाद, लखनऊ और मिदनापुर, स्थित और औ परीक्षण अनुसंधान एककों ने छठा औषधि परीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम पूरा कर लिया और यहां सातवां परीक्षण क्रम शुरू कर दिया गया है।

औषधि परीक्षण अनुसंधान से संबंधित रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है और अभी इसकी समीक्षा का कार्य चल र समय-समय पर इनके परिणाम सूचित किए जाते रहेंगे।

रिपोर्ट की अवधि में औषधि परीक्षण कार्यक्रम केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कलकत्ता में प्रारम्भ किया प्रारम्भिक कार्य यहीं पूरा किया गया।

विगत समय में औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक से इससे संबंधित जो रिपोर्ट मिली हैं उनमें जिन औषधि कार्य शुरू किया उनमें से बेराइटा कार्ब०, साइनोडोन डेक्टिलोन के बारे में के० हो० अनु० परिषद् (सी० सी० एच०) के त्रैमासिक बुलेटिन में इसी अवधि में प्रकाशित किया गया और काली म्यूर नामक तीसरी औषधि के बारे जानकारी मिलेगी उसे अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

(III) औषधि मानकीकरण अनुसंधान

इस अवधि में होम्योपैथिक महत्व की औषधियों का अध्ययन किया गया। और इस तरह क्रियारासायनिक भेषज अभिज्ञान और भेपजविज्ञान की दृष्टि से औषाधि मानकीकरण किया गया। यह अध्ययन कच्ची औषधियों और उनके मूल टिंक्चर (होम्योपैथिक) के साथ किया गया।

(क) निम्नलिखित औषधियों के भेषज अभिज्ञान मानक निकाले गए : ऐकालिफा इंडिका, एलियम सेपा, एलियम सेटाइवा, केनेबिस इंडिका और सेटाइवा, साइनोडान डेक्टिलान, कुरकुमा लोंगा, धतूरा मेटल, डिजिटेलिस परप्यूरा, आइवेरिस ऐमेरा, सोलेनम नाइग्रम, सोलेनम जैन्थोकार्पम, ट्रिबुलस, टेरेक्सेकम टेरेट्रिस, वाईथानिया सोमनिफेरा के।

(ख) निम्नलिखित औषधियों के भेषज विज्ञान के मानक निकाले गए : धूतरा मेटल, आइबेरिस, एमेरा, डिजिटेलिस, परप्यूरा, रावल्फिया सर्पे नटाइना (सर्पगंधा) और टेरेक्सम। इसके अलावा ऐजाडिरेक्टा इंडिका, कैनेबिस इंडिका, केनेविस सैटाइवा, सोलेनम जेन्थोकार्पम और विथेनिया सोमनिफेरा की विषालुता (टाक्सिसिटी) का अध्ययन भी किया गया।

(ग) निम्नलिखित औषधियों में क्रिया रासायनिक मानक निकाले गए : ऐजाडिरेक्ट इंडिका, कैसिया सोफरा, धतूरा मेटल, डिजिटेलिस, परप्यूरा, फिक्स रेलिज़िओसा, आइबेरिस एमेरा, रावल्फिया सर्पे न्टाइना, सोलेनम जैन्थो-कार्पम, साइजिजियम कुम्मिनी, टेरेक्सेकम, ट्रिबुलस टेरेट्रिस और विथेनिया सोमनिफेरा के।

अभी इस पर कार्य चल रहा है।

(IV) आयुर्विज्ञान साहित्य संबंधी अनुसंधान

इस अवधि में हृद्य वाहिकीय (कार्डियोवेसकुलर रोगों) के लिए लाभदायक होम्योपैथिक औषधियों का पता लगाने के लिए होम्यो साहित्य का गहन अध्ययन किया गया । अभी यह अध्ययन जारी है ।

इस अवधि में केन्ट की रेपर्टरी पर पुनर्विचार किया गया तथा इसका पुनरीक्षण किया गया । निम्नलिखित अध्यायों के संबंध में यह अध्ययन किया गया —

(1) मन, (2) सिर और (3) श्वसन ।

अभी यह कार्य जारी है।

दांत से संबंधित अध्याय के० हो० अनु० परिषद् के त्रैमासिक बुलेटिनों में प्रकाशित किए गए । देखिए खंड 2 संख्या 3, सितम्बर, 1980 और सं० 4 दिसम्बर, 1980

(V) औषधीय पौधों का सर्वेक्षण

इस सर्वेक्षण एकक को जिसकी स्थापना पहले अस्थायी तौर पर एच० पी० एल० के गाजियाबाद स्थित भवन में की गई थी, अब अपने स्वीकृत स्थान उडागामंडलम, तमिलनाडु के राजकीय कला महाविद्यालय के वनस्पति विज्ञान भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया है ।

रिपोर्ट की इस अवधि में दिल्ली और इसके आस-पास के क्षेत्रों, जैसे ओखला, सोना, महरौली, यमुना नदी के तटों, शिमला, चंडीगढ़, पिंजौर और इनके आस-पास के इलाकों, देहरादून और मसूरी, हरिद्वार और इसके निकटवर्ती क्षेत्रों और फरीदाबाद की यात्रा का आयोजन किया गया ।

इस दौरान 103 औषधीय पौधों का सर्वेक्षण किया गया और सर्वेक्षण किए गए पौधों के पादपालय (हरबेरियम) एकत्र किए गए । सर्वेक्षण वाले पौधों के बारे में जो लोकोक्तियां हैं उसे भी स्थानीय लोगों से सुनकर इकट्ठा किया गया ।

देहरादून, दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों, फरीदाबाद, सूरजकुंड, महरोली और वजीराबाद, नीलगिरि की पहाड़ियों, गोरखपुर (पूर्वी उत्तर प्रदेश) आदि क्षेत्रों के पौधों की जानकारी के लिए आयुर्विज्ञान साहित्य का अध्ययन किया गया ।

यह कार्य अभी चल रहा है ।

(V) रोग लक्षण सत्यापन अनुसंधान

गत समय में परिषद के तत्वावधान में परखी गई औषधियों, ऐब्रोमा अगस्टा, काली म्यूर के नैदानिक सत्यापन का काम भी इस अवधि में जारी रखा गया और परखी गई अन्य औषधियों, जैसे बेराइटा कार्ब पर भी कार्य शुरू किया गया। निम्नलिखित लक्षणों की सत्यता को प्रमाणित किया गया :—

(क) एब्रोमाअगस्टा

नाक बहना, पानी की तरह और काफी परिमाण में (3) अधिजठर (एपिगेस्ट्रियम) में दर्द के साथ-साथ अरुचि (1), नितम्ब (बटक्स) पर आशयी विक्षतियां (वेसकुलर लेखन), खुजली के साथ-साथ जलन। रात में ज्यादा (1) त्वचा का सूखापन, इसके साथ-साथ अंगूठे और तर्जनी अंगुलियों के पोरों पर दरारों का पड़ना और कभी-कभी इनसे खून निकलना, त्वचा का कठोर (कड़ा) होना तथा खुजली (1), लगातार छींकना तथा नाक से पानी का खूब बहना (राइनोरिया) (1), दर्द, दाहिने पर्शुक क्षेत्र में तेज दर्द। प्रातः स्नान से ज्यादा (1), वायु का बनना, साथ में शरीर में दर्द। खासकर प्रातः कालीन, घबराहट (1) पतली टट्टी (पतले दस्त), अर्धठोस पीलापन लिए हुए, प्रातः (1), ज्वर महसूस होते रहना। खासकर संध्या समय (1)।

(ख) काली म्यूरिएटिकम

सपूय मध्यर्णशोथ (सपूरेटिव) ओटाइटिस मीडिया, दोनों कान से गाढ़ा श्लेष्मपूयी उत्सर्ज (म्यूकोपूरुलेन्ट) (1)

बेराइटा आयोडेटम

बचपन से ही प्रतिदिन बिस्तर में मूत्र त्यागना (1), गले में लगातार खराबी और दर्द, आवाज में भारीपन (1), तेज खांसी और इसके साथ-साथ सम्पूर्ण शरीर में दर्द महसूस होना (1),।

इस विषय पर अभी कार्य हो रहा है।

ऊपर वर्णित औषधियों के अतिरिक्त आंशिक रूप से निम्नलिखित औषधियों को परखा गया और अध्ययन के लिए लिया गया :—

(1) एसिड बेन्जोइकम
(2) इगल फोलिया
(3) अशोका जोनोसिया
(4) ऐगल मारमेलास
(5) बेसिलिनम
(6) बर्बेरिस ऐक्विफोलियम
(7) बर्बेरिस वल्गेरिस
(8) बोएरेविया डिफ्यूजा
(9) ब्लाटा ओरिएन्टेलिस
(10) कैलोट्रापिस जाइगैन्टिका
(11) कैरिका पपाया
(12) सेफेलेन्ड्रा इंडिका
(13) डैमिआना
(14) एम्बेलिया राईब्स
(15) जिम्नीया सिलवेसट्रेस

(16) हाइड्रोकोटाइल एशिएटिका
(17) आईरिस टीनेक्स
(18) जोबोरेन्डी
(19) मेन्था पिपरेटा
(20) निक्टेन्थिज-आर्बोट्रिस्टिस
(21) सरसापैरिला
(22) विस्कम एल्बम

अभी तक के प्राप्त आंकड़ों से सही निष्कर्ष नहीं निकल पाया है, अतः कार्य जारी है।

ANNUAL REPORT

1980-81

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY
Ministry of Health & Family Welfare
Government of India

CONTENTS

S. No.	Subject	Page No.
1.	Aims and objects	i
2.	Introduction	ii
3.	Governing Body	iii
4.	Standing Finance Committee	vii
5.	Scientific Advisory Committee	viii
6.	Sub-Committees	ix
7.	Annual Progress Report	1
8.	Research fields	2
9.	Clinical Research	14
10.	Drug Proving Research	15
11.	Drug Standardisation	16
12.	Literary Research	17
13.	Survey and Collection of Medicinal Plants	18
14.	Clinical Verification	

AIMS AND OBJECTS

Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th March, 1978 under Society Act XXI of 1860 with the following main objectives :

1. The formulation of aims and objects, patterns of research on scientific lines in Homoeopathy,
2. To undertake any research or other programmes in Homoeopathy,
3. The prosecution of and assistance in research, the propogation of knowledge and experimental measures generally in connection with the causation, mode of spread and prevention of diseases, and
4. To initiate, aid, develop and co-ordinate scientific research in different aspects, fundamental and applied of Homoeopathy and to promote and assist institution of research for the study of the diseases, their prevention, causation and remedy etc.

INTRODUCTION

The Central Council for Research in Homoeopathy has pleasure in presenting its repo for the year 1980-81 and the audited statement of accounts for the year ending 31st Marc 1981.

This Council established in the year 1978 and started functioning independent w.e.f. 10.1.1979 consequent on the dissolution of the erstwhile C.C.R.I.M.H.

The objectives as laid down are being achieved through 28 different units located in th various parts of the country.

The assignments of programme, formulation of technical guidelines, fixation of para meters for the study, assesment and evaluation of results are under the purview of the Scientifi Advisory Committee. During the period under report only one meeting of the S.A.C. could b held.

The technical section of the Council undertake the task of implementation of the recom mendations of the S.A.C. and monitor research done at different units.

LIST OF THE MEMBERS OF GOVERNING BODY

(Upto 8th July, 1980)

		President
1.	Minister of Health and Family Welfare	Vice President
2.	State Minister of Health and Family Welfare	
3.	Secretary/Additional Secretary, Health Ministry of Health and Family Welfare	Member
4.	Joint Secretary, Incharge of I.S.M. Ministry of Health and Family Welfare	Member
5.	Joint Secretary and Financial Adviser Ministry of Health and Family Welfare	Member
6.	Dr. Jugal Kishore Adviser (Homoeopathy) Ministry of Health and Family Welfare	Member
7.	Dr. Diwan Harish Chand 1, Hanuman Road New Delhi	Member
8.	Dr. J. N. Kanjilal 87, Lenin Sarani Calcutta	Member
9.	Dr. M. L. Dhawle 285-A, Fifth Road, Chembur Bombay	Member
10.	Dr. Nagbhushanam Principal Jaisurya Homoeopathic Medical College, Hyderabad	Member
11.	Dr. M. M. S. Ahuja Head of the Department (Medicine) A. I. I. M. S. New Delhi	Member

12. Dr. D. N. Prasad,
Principal,
M. L. B. Medical College,
Jhansi

13. Prof. S. K. Vaish, — Member
Consultant, Physician & Cardiologist,
S. S. L. Hospital, B. H. U.,
Varanasi

14. Director, — Member
National Institute of Homoeopathy,
118—Amherst Street,
Calcutta

15, (i) Dr. P. N. Varma (upto 6-2-1981) — Member
(ii) Dr. V. T. Augustine (w.e.f. 7-2-81)
Director
Central Council for Research in Homoeopathy
Ghaziabad. — Member-Secretary

LTST OF THE MEMBERS OF STANDING FINANCE COMMITTEE

1. Joint Secretary
Incharge of I.S.M.
Ministry of Health & Family Welfare
Nirman Bhawan,
New Delhi — Chairman

2. Joint Secretary and Financial Adviser
Ministry of Health & Family Welfare,
Nirman Bhawan,
New Delhi — Member

3. Dr. Jugal Kishore,
Chairman (SAC),
86- Golf Link,
New Delhi — Member

4. Director,
Central Council for Research
in Homoeopathy,
Ghaziabad. — Member-Secretary

LIST OF THE MEMBERS OF SCIENTIFIC ADVISORY COMMITTEE

1. Dr. Jugal Kishore,
   Adviser (Homoeopathy),
   Ministry of Health & Family Welfare,
   New Delhi — Chairman
2. Dr. Diwan Harishchand,
   1, Hanuman Road,
   New Delhi — Member
3. Dr. J.N. Kanjilal,
   87, Lenin Sarani,
   Calcutta — Member
4. Dr. K.P. Muzumdar,
   Director,
   National Institute of Homoeopathy,
   Calcutta — Member
5. Director,
   Central Council for Research
   in Homoeopathy,
   Ghaziabad. — Member-Secretary

The Scientific Advisory Committee coopts as Special Invitees, experts from differe disciplines depending on the agenda items as and when required. The Scientific Advisor Committee has constituted Sub Committees with Director as Member-Secretary For scrutiny evaluation and to make suggestions for improvement in output enjoying the status of Sub Committee to function on the pattern of working groups, consisting of the following :

SUB-COMMITTEES WORKING GROUPS

Clinical Research :

Dr. M. L. Dhawle,
285-A, Fifth Road,
Chembur, Bombay.

Dr. Diwan Harish Chand,
1, Hanuman Road,
New Delhi.

Dr. M. Kutumbarao,
Clinical Research Unit,

Dr. Gururaju
Govt. Homoeopathic
Medical College,
Gudivada.

Dr. D. P. Rastogi,
Principal,
N. H. Medical College,
B-Block, Defence Colony,
New Delhi.

Drug Proving :

Dr. Jugal Kishore,
Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health & Family Welfare,
Nirman Bhawan,
New Delhi.

Dr. S. K. Nayak,
Drug Proving Research Unit,
D. N. De. Homoeopathic Medical
College & Hospital,
Calcutta.

Dr. V. T. Augustine,
Deputy Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health & Family Welfare,
New Delhi.

Drug Standardisation :

Dr. M. P. Arya,
Registrar,
Central Council of Homoeopathy,
J 1/32, Jhandewala Extension,
New Delhi.

Dr. K. P. Muzumdar,
Director,
National Institute of Homoeopathy,
118, Amherst Street,
Calcutta.

Dr. J. N. Tayal,
Retired Director, CIPL,
Kavi Nagar,
Ghaziabad.

Dr. N. Ramayya,
Project Officer,
Drug Standardisation Unit
Department of Botany,
Osmania University,
Hyderabad.

Literary Research:

Dr. P. N. Varma,
Deputy Director,
Homoeopathic Pharmacopoeia
Laboratory Ghaziabad.
Dr. Jugal Kishore,

Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health & Family Walfare,
New Delhi.

Dr, K. N. Kasad,
A. H. Wadia Baug,
3/10. Patel Tank Road,
Bombay-400033.

Dr. R. P. Patel,
Hahneman House,
College Lane,
Kottayam.

Annual Progress Report
1980–81

Research Fields :

I. Clinical Research
II. Drug Proving Research
III. Drug Standardisation Research
IV. Literary Research
V. Survey and Collection of Medicinal Plants
VI. Clinical Verification.

I. CLINICAL RESEARCH

The Clinical Reseasch on the assigned projects, was continued in the following two ways during the year under report :

(A) Drug Oriented

(B) Symptom-Syndrome (so-called Disease) Oriented.

(A) DRUG ORIENTED :

The following projects were undertaken for study :

1. Clinical evaluation of two lesser known drugs : Xanthoxyllum and Viburnum opulus on Symptom-Complex of Dysmenorrhoea :

During the period under report 35 cases of primary dysmenorrhoea were added in the trial. All were unmarried women of age range from 12-24 yrs. (37 cases were studied in previous year-23 on Xanthoxylum & Vib. opulus & 14 cases on other indicated durgs). The improvement index is given below (35 cases in respect of 1980-81).

S. No.	Drug	Total Cases	Improved	No. Improvement	Worse
1.	Viburnum Opulus	15	12	3	—
2.	Xanthoxylum	20	16	4	—

Both the drugs were found to be effective in mother tincture forms and in 3x potency and in repeated doses. During the trial it was observed that no adverse effect was noted after the application of these drugs; and regarding the degree of improvement, some of the cases reported free of pain for three consecutive menstrual periods but did not report thereafter and hence the prefixed parameter of 6 months could not be fulfilled.

The following symptoms improved after the application of these medicines :

XANTHOXYLUM.

Proving Symptoms Confirmed

1. Neuralgic dysmenorrhoea with neuralgic headache (13)**
2. Neuralgic pain during menses (9) (Free of symptoms-3 consecutive period).
3. Pain in lower abdomen extending to thigh (17) (Free of symptoms in 3 consecutive periods in 2 cases)
4. Pain in lower abdomen 25% improved (4).
5. Pain in lower abdomen 50% improvement (14).
6. Menses profuse, early (14).
7. Menses-thick, almost black (4).
8. Leucorrhoea at the time of menses (2).
9. Nervous patient (1)
10. Thin and delicate person (5)
11. Emaciated persons (4)

Additional Symptoms Relieved

Headache with nausea and vomitting (11).
(Free of symptoms in 3 consecutive period).
Pain with nausea (10)
Pain with trembling of whole body-(1).
Pain with rise of temperature upto 100 °F-(1).
Leucorrhoea after menses 50% less (7).

Generalities :

Chilly patient-(26)
Hot patient-(20)
Desire-sweets, warm food (7) salt (9).
Thirsty (8).
Poor appetite (18).
Mind : Nervous irritable
Mild temperament (7).

Viburnum Opulus :

1. Cramping and colickly pain during menses (20)
   (Free of symptoms-2 consecutive period in 2 cases)
2. Pain during menses 50% less (10).

Menses associated with headache and anoraxia (5)

Pain associated with nausea (5)

The symptoms which are repeatedly verified as menitioned above may be considered as confirmed one.

The character of pain is not indicated in this report because the same could not be narrated by the patient. Regarding location of pain, it is of lower abdominal region.

3. Cramping pain extending down to thigh (10).
   (Free from 3 periods)
4. Pain-wrose early morning (3)
5. Bearing down pain-colicky from sacrum to pubes (5)
   (Free of symptoms 2 periods in 2 cases.)
6. Menses late scanty (13)
   (Normal flow-4 periods in 2 cases).

Leucorrhoea after menses 50% less (3).

Generalities :

Hot patient (12)
Chilly patient (6)
Desire : Spices, chillies, cold food (5) sweet.
Aversion for sweets, Vegetables.
Mind : mild, lachrymose (10) Irritable short temper (7) Thirsty (5).
Appetite poor (15).

** NB Figure against each symptom indicate the number of patients in whom the the symptom was confirmed.

In order to know the potentiality of the drugs in respect of compelate recovery of the cases and to find out the additional data, the further study is in progress.

2. Clinical evaluation of felix mas (an Indian specie) on symptom complex related to Helminthiasis.

There were 32 cases included in the trial during the period. The patients were of 3 years to 12 years of age and the duration of illness varried from one month to 3 years. (35 cases wore studied with Felix mas in previous year.) Laboratory investigations like repeated stool examinations and the *investigation of blood and urine were carried out before and during the treatment.* The improvement index is mentioned below :

Species of Worm	*Total No. of cases*	*Improvement*	*No. improvement*	*Worse*	*Not reported*
1. Ascariasis	18	8	6	—	4
2. Ancylostoma duodenale (Hook-Worm)	2	—	2	—	—
3. Taenia (Tape Worm)	2	1	1	—	—
4. Other cases	10	6	2	—	2

All the reported cases appeared to be psoric in nature. During the trial it was observed that the medicine was found effective in lower potencies and improvement was noticed in the symptom complex of helminthiasis within two weeks in the cases under trial but it has a very superficial action which could give relief to the functional symptoms without changing the pathology. Expulsion of worm was found in 3 cases (round worm) only.

In order to establish the complete drug-picture including constitution, generalities etc. of this drug, more cases (at least 300 cases) are to be included in the trial, and thus the work is in progress.

3. Clinical Evaluation of Bowel Nosodes on various diseases :

During the period under review 29 cases were added in this clinical project. They were administered on the basis of the sign symptomatology available in the literature. The improvement indices are indicated below :

Result

IMPROVEMENT INDICES UNDER DIFFERENT DRUGS ON TRIAL

Medicine	*Total No. of cases*	*Improved*	*No. relief*	*Not reported*
Morgan gart.	5	2	1	2
Dysenteri co	17	8	4	5
Sycotic co	5	4	1	—
Proteus	2	1	—	1

Symptoms on the basis of which the drug was prescribed and found effective :

Symptom on which the medicine was administered	*Symptoms relieved during trial*
Dysenteri co	
1. Pain in abdomen by vomitting (11)	Pain in abdomen-subsided (10)
2. Pain in abdomen ∠ by hearing (6)	subsided (4)
3. Loose frequent stool 5/6 times per day (5)	Relieved (2)
Diarrhoea on worry (5)	Improved (7)
Desires ; sweet, salt, milk, fat (10)	No change.
5. Physical and mental restlessness (5)	Restlessness (3)
6. Nervous tension with full of fear (2)	Nervous tenson improved (1).
Sycotico co :	
1. Fear of being alone, fear of dogs (1).	Free of symptoms (1)
2. Lips dry, cracks in angle of mouth (2)	Cracks-improved (2)
3. Desire-butter, fat, milk (2)	Desire no change
4. Nausea by smell of food (2)	Nausea Improved (2)
5. Shallow, anaemic puffy face (2)	Anaemia improved (2)
6. Irritable	Irritablity-improved
7. Left sided headache ∠ noise, during menses (1).	Headache improved.
8. Hard spasmodic cough with dyspnoea ∠2 A.M. (2)	Cough with dyspnoea (2)
Morgan Gartner :	
1. Nervous tension (1)	Nervous tension improved ;
2. Bitter taste of mouth (2)	Bitter taste of mouth-improved (2)
3. Desire-sweet, salt, warm food (3) Fat, egg (2)	No change
4. Pain in epigastrium, vomiting ∠ after-noon (2)	Pain subsided (2)
5. Irritable temperament, weepy (3)	Irritability improved (2)
6. Avoids company (2)	Aviods company (2)
7. Salivation at night (1)	Salivation improved (1)

Proteus :

1. Out burst of violent temperament when opposed — Improved (2)
2. Hunger pain not relieved by eating (1). — Hunger pain subsided (1)
3. Bowels constipated (2) — Constipation-improved bowels regularised (2)
4. Pain in chest ∠ on cold exposure (2) — Pain chest-relieved (2)

During the study the sphere of action of these drugs is found particularly on the gastro-intenstinal disorders with some mental and physical generalities. But in order to verify and confirm these generalities of the drugs more cases are to be included for trial under each drug.

**NB. Figures against each symptom indicates the number of patients showed the symptoms and relieved.

4. Clinical trial of homoeopathically potentised Insulin on Diabetes Mellitus.

A controlled clinical trial 'to ascertain the efficacy of homoeopathically-potentised insulin on hyperglycaemic subjects' was continued during this year. 19 cases were included in the trial whose blood sugar level was above the normal limit either in fasting or post prandial. All the cases were of middle and elderly age group and duration of their illness varied (from 2 to 10 years).

All the cases were divided into two groups—group A & Group B i.e. Group 'A' (means where post prandial BSL was above normal but fasting BSL was within normal limits and group 'B' includes the cases were Fasting as well as post prandial BSL were above normal limits and were already on antidiabtic (allopathic treatment.

Group A :

Results of two cases (1 & 2) are shown in this group.

1. Case No. 1 registered normal BSL (P) at the second month and is kept under observation. No symptomatic improvement was observed inspite of lowering of BSL to normal.
2. Case No. 2 registered normal value of BSL (pp) recorded at 4th and 6th month. In association with lowering of BSL symptomatic improvement was recorded.

Group B :

Result of *seventeen cases* are analysed below :

1. One case (2) did not responded with the insulin; but responded with indicated medicine Ars. alb. by 50 millesimal potencies both breathing difficulty and hyperglycaemia were improved by the medicine.
2. Two cases (9, 13) touched normal BSL at the 8th and lst month respectvely. But symptomatic improvement was not observed in one of these subjects i.e in case 9.
3. Six cases (1, 6, 7, 8, 11,15) have registered a fall in their BSL with symptomatic improvement.

4. Two cases (3, 12) registered increase of BSL with no symptomatic changes.
5. Five cases (4, 5, 10, 16, 17) dropped out from the clinical trial ; and so the results of these cases could not be asssessed properly.
6. One case (14) who was under treatment of crude insulin prior to clinical trial did not respond with potentised insulin rather BSL became higher than its original state.

All the cases seemed to be psoric in nature. During the trial it was found that the potentised insulin do possess some potentiality in releiving the following symptoms :

Head :

Vertigo-∠on motion (2)
Eye-Burning sensation of eyes better cold application.
Respiration ; Breathing difficulty ∠ on exertion (3).
∠ ascending upstairs (2)

Pain in left side of chest.

Heart ;

Palpitation (2),
First heart sound-weak.

Abdomen :

Flatulence : distension of addomen after passing of flatus (2) Rumbling in abdomen.

Stomach :

Acidity, sour smell of stool and sour taste of mouth.

Rectum. stool : Bleeding piles.

Extremities : Pain in shoulder joints ; restless with pain ∠ night. Pain and stiffness of the fingers of the right hand. Burning sensation of the palms and soles. Aching pain in lower limb. Swelling of the joints.

Skin :

Urticarial type of eruptions all over the body, but more in Lower extremity.
Itching with desquamation of skin (2).
Paronychia and eponychia.
Pimpler eruption all over the body with itching.

Sleep :

Sleeplessness without apparent reason.

Urine :

Frequency of urination (3)
Urgency of urination.

**Figures against the symptoms indicated the serial number of the patients showed improvement

Generalities :

WEAKNESS DISAPPEARED WITH FEELING OF GENERAL WELL BEING

Blood sugar estimation was carried out by the method of Folin & Wu in all the subjects under trial before starting the treatment and during the treatment at the interval of one month or as soon as the improvement showed.

It is observed from the trial that the drug was found effective in 30th potency than higher and no adverse reaction of the drug was reported during the trial. And the drug has possessed some sphere of action in lowering BSL but not to the extent as rapidly as it is done by crude insulin. It has been found that the activity of the drug was more in those who had shown evidence of hyperglycaemia. Further work in this regard is in progress.

(B) SYMTOM-SYNDROME (SO-CALLED DISEASE) ORIENTED

1. Role of Homoeopathic medicines on symptom-complex related to hypertension.

The study on this project could not be undertaken due to non-availability of cases during the year under the report.

2. Role of Homoeopathic medicines in managment of symptom complex of Rhinitis :

The study on this project was continued during this year also. 325 cases were added in the trial. Out of which 12 cases were symptom free, 77 cases-remarkebly improved. 110 showed slight improvement, 4 cases had registered no relief, 119 cases did not report for follow up and 3 cases under observations.

The medicines used and found effective were Aconite Nap, Arsenic Album, Allium Cepa, Acid Nitricum, Ammonium Crabonicum, Baryta Carbonicum, Cal Carb, Euphrasia, Hepar Sulph, Kali Muriaticum, Kali Sulphuricum, Lycopodium, Lemna Minor, Mercurius, Pulsatilla, Sulphur, Silicea, Sabadilla, Tuberculinum, Thuja, Wythania Somnifera.

Further work is continuing.

3. Role of Homoeopathic medicines in management of symptom-complex of Sinusitis :

Total *81 cases* were recorded during the reported period out of which 2 cases were cured, 20 cases were remarkeably improved, 21 cases slightly improved, 5 cases had no relief, 29 cases did not report for follow-up and 4 cases are under observation.

During the study it was observed that the symptoms showed decline in intensity, duration and rate of recurrence. Associated symptoms viz. headache, vertigo, heaviness of eyes, hardness of hearing, nausea etc. were also relieved. The medicines used were Arsenium Album, Belladonna, Bryonia Alba, Calcarea Carbonicum, Calcarea Sulphuricum, Hepar Sulphur, Kali Bichromicum, Kali Muriatium, Lemna Minor, Lachesis, Lycopodium, Mercurius, Natrum Muriaticum, Nux Vomica, Sanguinaria Canadensis, Silicea, Stricta Pulmona, Spongia, Tuberculinum (Bovinum).

4. Role of Homoeopathic madicine in management of symptom complex of Tonsillits.

There were *150 cases* included in the period under report. 12 cases were registered

symptom free, 51 cases were remarkably relieved, 24 cases slightly releived, 5 cases registered no relief, 49 cases failed to report & 9 cases were still under follow-up.

Generally mixed miasms with predominance of either tubercular or sycosis was reported. The medicines used and found useful were Arsenicum Album, Baryta Carbonincum, Belladonna, Bryonia alba, Calcarea Carbonicum, Mercurius Bin sodatum, Natrum muriatium, Natrum sulphuricum, Silicea, Sulphur, Iodium, Ferrum Phosphoricum, and the Nosodes like Tuberculinum & Bacillinum, worked well as intercurrent remedies ; these medicines were useful in minimising the chances of recurrences, duration of intensity of the condition.

The trial is still under progress.

5. Role of Homoeo. medicines in various skin disorders (including allergy) :

433 case of various skin affections were added in the trial during the period under report, out of which 79 cases reported symptom free, 63 cases reported remarkable improvement, 127 cases were slightly relieved, 1 case become worse, 27 cases got no relief, 126 cases did not report for follow-up & 10 cases are under follow-up.

6. Role of Homoeopathic medicines on symptom complex of Bronchial Asthma :

1,308 cases were reported in the period under report, 299 cases were remarkably relieved, 684 cases were relieved modrately. 125 cases got no relief, 35 cases become worse, 62 cases did not report, 202 cases are still under follow-up. E.S.R. & Eosinophils perecentage came to normal or near normal a ter treatment.

The medicines used were Arsenicum Album, Antimony Tartaricum, Blatta Orientalis, Bacillinum, Causticum, Carbo Vegetabilis, Cactus Grandiflora, Calcarea Carbonicum, Drosera Ipecacuanha, Kali Carbonicum, Kali Bichromicum, Psorinum, Pothos, Pulsatilla, Phosphorus, Sulphur, Sulphuric Acid, Thuja, Tuberculinum. Psora & Sycotic miasms were predominant; with history of tubercular miasm in many cases.

It was observed that the acute paroxysmal attacks of dyspnoea were well controlled with the indicated medicines.

The work is under progress.

7. Role of Homoeopathic medicines in symptom complex of Rheumatic Fever/ Arthritis :

The work on Rheumatic Fever/Arthritis continued in 1980-81, and 47 cases were reported, out of which 1 case got remarkable relief, 45 cases slightly improved and 1 case did not report.

Males were found to be slightly more prone to this disease and the cases reported more from 10-19 years of age group. Psora & Sycosis were the dominating miasm. Drugs found to be useful were Bry. alb., Kalmia, Ars.alb., Lédum, Lycopod, Rhus. tox, Arnica, Pulsatilla, Merc. cor., Colchicum, Lachesis, Apis Mel, Cal. Sulph, Chamomilla, Digitalis, Kali. Bi., Chelidonium, Thuja, Sulphur, Calcarea Carbonicum, Nat. Mur, Medorrhinum, and psorinum.

More cases are needed for arriving at any conclusion, the work is in progress.

8. Role of Homoeopathic medicines in symptom complex of Mental diseases.

The work on mental diseases continued in cited year also. The incidence of mental

illness (Schizophrenia, Anxiety Neurosis, Mania) is found more in males of middle age group i.e. 20 to 40 years. Total 307 cases reported in 1980-81, out of which 88 cases got 75% or more relief and 122 cases registered 25% relief, 48 cases registered no relief, 4 cases became worse and 45 cases not reported.

Incidence of mental disease was found high in married persons. Unskilled workers were observed to be more prone to be mentally disturbed. More of the cases fell in Paranoid group. i.e. III category of Hahnemannian classification. The miasms Psora and Sycosis were more dominant. The drugs found effective were Belladona, Gelsemium, Hyoscymul, Ignatia, Cannabis, Indica, Phosphorus, Pulsatilla, Staphysagria, Sulphur & Opium, Merc. Sol , Lachesis, Veradrum Album & Causticum.

The work is in progress.

9. Role of Homoeopathic medicines on symptom complex of Diabetes Mellitus :

80 cases of Diabetes Mellitus were registered in the year under report. 33 cases showed slight belief, 16 cases registered no improvement, 3 cases became worse, 13 case are under follow up and 15 cases were discontinued.

The incidence of Diabetes was higher in old age group i.e. 40. years and above : the drugs found effective in lowering the blood sugar level (fasting as well PP) and urine sugar level and controlling other complications were Sulphur, Acid phos., Phosphorus and Tarentula.

The work is in hand.

10. Role of Homoeopathic medicines in the management of symptom complex of Alopecia.

19 cases were reported in the year under report, 1 case showed remarkable improvement. 4 case showed moderate improvement 7 cases registered no improvement, 7 cases did not report.

The medicines found effective were Acid Phos, Flour acid, Lycopod., Natrum Muriaticum Phosphorus & Vinca Minor. Exciting causes were Seborrhoea, Skin diseases, Neurosis etc. The project is in progress.

11. Cervicitis & Cervical Erosion :

This commonly prevailing problem was undertaken in one of the Regional Research Institutes. Data of 16 cases have been collected, out of which 2 cases showed remarkable improvement and 10 cases were moderately relieved, 2 cases did not get any improvement, 1 case did not report and 1 case is under follow-up, it is inferred that females of 21-40 years age, are the most prone to this disease.

Pulsatilla, Cantharis and Sepia were the medicines which helped in relieving the cases.

12. Role Homoeopathic medicine on symptom complex of Otitis Media.

71 cases reported in the period under report, 6 cases became symptom free, 11 cases remarkably relieved, 15 cases got slight relief, 12 cases got no relief, 25 cases did not report, and 2 cases are under observation.

The medicines viz. Hepar sulpha, Silicea, Mercuris Solubilis, Pulsatilla and Tellurium were found useful in relieving the cases.

13. Psoriasis

The work on this problem was also continued in the period under report. Only 2 cases could be reported who were relieved moderately. Both the cases were female.

More cases are still awaited to arrive at any conclusion ; the work is in progress.

14. Warts & Corns :

24 cases could be included in the trial ; 3 cases showed remarkable improvement, 9 cases were reported to be moderately improved, 7 cases did not report and 5 cases are still under observation.

Thuja was the drug which relieved most of the cases. The study is in progress.

15. Malaria :

The work on malaria was also continued in the year under reference, as it has become a serious threat to health of people ; in 4 Clinical Research Unit of CCRH. 93 cases of Malaria have been studied, 25 cases-reported to be symptom free, 1 case registered remarkable imporvement, 12 cases recorded as improved moderately, 6 cases did not respond, and 49 cases did not report for observation.

It was noted that the medicines viz. Ars. Alb., China, Sulph., China Ars, Eup. Perf., Cina and Pulsatilla can control and minimise the recurrences of the attacks of malaria.

More cases are needed to draw any concrete conclusion. So the work is in progress.

16. Filariasis:

Clinical Research work was carried out in three units where 479 cases have been studied, of which 8 cases were registered to be symptom free, 17 cases showed remarkable relief, 109 cases showed moderate relief (50%-75%) & 104 cases showed slight relief. 7 (less than 2%) 41 cases did not get any relief, cases became worse during the treatment and 193 case did not report.

Medicines found effective were Rhus tox, Bryonia, Pulsalilla, Rhododendron, Hydrocotyle, Medorrhinum, Lycopodiun, Sepia, Sulphur, Natrum muriatium etc. The trial is in progress.

17. Osteo-Arthritis :

This problem was also started in one enquiry under CCRH from Jan., 81. Total 72 cases have been studied, 17 cases reported for remarkable improvement, 20 cases moderate relief, 6 cases did not improve, 24 cases did not report and 3 cases are under follow-up.

Females over 40 years of age found to be more prone to this disease. Medicines found useful are Ant. crud, Arn. mont., Bacill, ; Bry. alb., Cal. carb, ; Carcinocin ; Ignatia ; Kalmia, Lyco., Puls, and Rhus Tox. The sycosis miasm was predominant.

Further study is in progress.

18. Role of Homoeopathic medicines on the management of symptom complex of Acute Respiratory diseases :

During the period under review data of 110 cases of various acute respiratory diseases like Rhinitis, Sinusitis, Laryngitis, Common cold, Influenza and Bronchitis have been collected. 80 cases were registered symptom free, 16 cases got remarkable improvement, 5 cases moderately improved, 9 cases did not report for follow-up. History of Tuberculosis was found in 40% of cases.

Medicines found effective to control the acuteness of disease were Acon, Ars. Alb, Bry Alb. Caust, Ferr. Phos, Gels, Sulph, Kali mur, Merc. Sol, Nux Vom., Rhus Tox, Psor & Tubercul.

19. Pharyngitis :

The project was continued during the year under report, 19 cases were studied, out of which 4 cases have been relieved remarkable and 8 cases registered slight relief, 7 cases did not report.

Psoric miasm was found to be dominating. Medicines found effective were Belladonna, Baryta Carb, Bryonia Alb, Ferrum Phos, Sulph. Hydrastis. Can., Kali Bich., Kali Mur, Lachesis, Nat. mur, Nit. acid, Nux vom., Merc sol., Phyto. & Puls.

20. Mumps :

11 cases were reported in this year and all the cases were cured. 7 cases were male and 4 cases female of age group 5-15 years. The cases were tried for 4-15 days.

Drugs found effective were Mercurius & Belladonna in 30 and 200 potencies. The work is in progress.

21. Infective Hepatitis

9 cases were reported & all the cases were recovered in 5-25 days treatment. 6 cases were male and 3 female.

Drugs found effective were Nat. Sulph and China in 30 and 200 potencies.

22. Herpes :

17 cases were reported in the period under report; and all of them recovered in 4-8 days. 12 cases were male and 5 cases famale.

Drugs found effective were Ars. Alb., Sepia and Ran. Bulb. in 30 and 200 potencies.

23. Amoebiasis :

24 cases of dysentry (amoebiasis type) were reported in the period under report; 8 were recovered, 6 cases were remarkably relieved, 3 cases were relieved moderately and 7 did not report.

The medicines mostly used were Atista indica, Nat. mur, Phos, Nux vom., Tubercular miasm was found responsible in 16 cases. The work is in progress.

24. Antifertility

The experimental research of the drugs *Pulsatilla nigra* and Caulophyllum was continued in order to study their antifertility property during the period under review. In addition to these two drugs, the similar study was started on the drugs Dichlo-rophenoxy acetic acid & Naturm Muriaticum. The experiments were conducted in different potencies on albino rats.

The study on Dichlorophenoxy acetic acid showed that it possesses progestrogenic properties.

Further study on these drugs is in progress.

25. Clinical proving of Tuberculinum :

30 cases have been included in the trial this year. The drug was prescribed as intercurrent remedy in 17 cases and as initial remedy in 13 cases. The data collected so far revealed the fact that when Tuberculinum was prescribed on the basis of past history and with consideration of its affinity towards chief complaints of patients e.g. Recurrent cold, Tinea infection, Giardiasis, Acne vulgaris, Vitiligo, Chronic conjuctivitis, Glomerular nephritis, Enlarged prostate. Throat infection, Tubercular lymphadenitis etc. this showed marked improvement in their chief complaints as well as associated complaints. It works magnificantly in cases having past history of measles, chicken pox, worms, jaundice, typhiod, tuberculosis, mumps, reccurent cough & cold etc. It is also revealed that in patients with family history of T. B., Hypertension, Asthma, Arthritis, Hyperacidity, Tuberculinum found to be effective. patients reaction towards temperature is noted in this trial as : 20 cases (Hot); 7 cases (Chilly) and 3 cases (Ambithermal).

II. DRUG PROVING RESEARCH

The drug proving research was continued during the reporting year also Double blind technique was followed for conducting the proving trials. The coded drugs were sent from time to time to the units.

The fifth drug proving research programme was concluded at the proving research units situated at Bhagalpur and Calcutta and sixth proving pragaramme was started in both these Units as well as at R R.I , New Delhi; whereas, the Drug Proving Research Units at Ghaziabad, Lucknow & Midnapore had completed sixth drug proving research programme & 7th proving programme had been started there.

The drug proving research reports have been received and are at scrutinization level. The observation made on them were conveyed from time to time.

During the reporting period, the drug proving programme was initiated at Central Research Institute at Calcutta. The preliminary work was being completed there.

The various drug proving research reports received from drug proving research units in the past were scrutinized on the drugs viz. Baryta Iodata, Cynodon Dactylon were published in Quarterly Bulletin of C.C.R.H. during the period under report and on the third drug i.e. on Kali Muriaticum as reproved will also be published in the next issue.

III. DRUG STANDARDISATION RESEARCH

The drug standardisation research in terms of Physicochemical, Pharmacognostical & Pharmacological study of the drugs of Homoeopathic importance was continued during the period under report. The study was conducted for raw drugs as well as of homoeopathic mother tinctures of the same drugs.

(*a*) The pharmacognostical standards of the drugs viz. Acalypha indica, Allium cepa, Allium sativum, Cannabis indica & sativa, Cynodon dactylon, Curcuma longa, Datura metal, Digitalis purpura, Iberis amara, Solanum nigrum, Solanum xanthocarpum, Taraxacum, Tribulus terrestris, Withania somnifera were drawn.

(*b*) Pharmacological standards of the drugs; Daturametal, Iberis Amara, Digitalis purpura, Rauwolfia serpentina and Taraxcum were carried out. Beside this the toxicity of Azadirachta indica, Cannabis indica, Cannabis sativa. Solanum xanthacarpum & Withania somnifera was also studied.

(*c*) Physicochemical standards of the drugs; Azadirachta indica, Cassia sophera, Datura metel, Digitalis purpura, Ficus religiosa, Iberisamara, Rauwolfia serpentina, Solanum xanthocarpum, Syzygium cummini, Taraxacum, Tribulus terrestris, and Withania Somnifera were laid down.

The work is in hand.

IV. LITERARY RESEARCH

During the period under report the literature was scanned to find out the useful homoeopathic drugs for cardiovascular diseases. The study is in progress.

Literary work on the review and revision of Kent's Repertory was continued during this year also. The study was carried out in respect of following chapters.

(*i*) Mind, (*ii*) Head & (*iii*) Respiration. Further study is in progress.

The chapters pertaining to Teeth was published in the Quarterly Bulletines of CCRH Vol (II) No. 3 Sept. 1980 and No. 4 December 1980.

V. SURVEY OF MEDI[illegible] PLANTS

The survey unit which was temporarily established in the premises of Homoeopathic Pharmacopoea Laboratory Ghaziabad has now been shifted to its approved place i.e. Tamil Nadu in the premises of Govt. Arts College, Deptt. of Botany.

During the period under report survey tours were conducted to Delhi and its surrounding areas viz. Okhla, Sona, Mehrauli, banks of Yamuna river; Simla, Chandigarh, Pinjore and their surroundings; Dehradoon & Masoori, Haridwar and its adjoining areas and also to Faridabad.

There were 103 medicinal plants surveyed and herbariums of these surveyed plants were being maintained at the Unit. Folklore usages of surveyed plants was also gathered from the local people.

The literature was scanned for the avilability of plants in the areas viz. Dehradun, surroundings of Delhi, Faridabad, Surajkund, Mehrauli and Wazirabad; Nilgiri hills and Gorakhpur (Eastern U.P.).

The work is in progress.

VI. CLINICAL VERIFICATION

The clinical verification of the drugs proved under the aegis of the Council in the past i.e. Abroma Augusta, Kali Muriaticum was continued during this year also and the similar study was started on another proved drug Baryta Iodata also. The following symptoms were verified :

**(*a*) *Abroma Augusta* : Running nose ; watery and profuse (3) pain at epigastrium with anorexia, (1) Vesicular Lesions at the buttocks, itching with burning ∠night (1), Dryness of skin with fissures at the tip of the thumb and index fingers with occasional bleeding. Hardness of skin with itching (1), Sneezing bouts with watery rhinorrhoea (1), pain, excoriating in right costal region ∠Morn., bath (1), Wind formation with bodyache ∠Morn., malaise (1), Loose stools; semisolid yellowish, ∠morning (1), Feverishness ∠Evening (1).

(*b*) *Kali, Muriaticum.* Suppurative Otitis Media, with thick mucopurulent discharge from both ears (1).

(*c*) *Baryta iodata.* Bed wetting since childhood every day (1), constant sore pain in throat, with hoarseness (1), cough acute with aching sensation all over the body (1). The work is in progress.

Besides above mentioned drugs, the study on the following partially proved drugs, was taken up—

1. Acid Benzoicum
2. Aegle Folia
3. Ashoka Jonosia
4. Aegal marmelos
5. Bacillinum
6. Berberris Aquifolium
7. Berberris Vulgaris
8. Boerhaavia diffusa
9. Blatta Orientalis
10. Calotropis gigantia
11. Carrica pappya
12. Cephalendra indica
13. Damiana
14. Embelia Ribes
15. Gymnea Sylvestre
16. HydrocotyleAsistica
17. Iris Tenax
18. Jaborandy
19. Justicia Adhatoda
20. Mentha Piperata
21. Nyctanthes arbor-tristis.
22. Sarasaparilla
23. Viscum Album.

The data collected so far is not to conclusive and so the work is in progess

** Figures in brackets denote number of times the symptom was verified.

Receipt		*Amount*
Flood Advance	185·00	9,196·00
7. Income Tax recovered		3,851,00
8. **CPF of Staff**		
(*a*) Centralised Units	85,422,00	
(*b*) CRI, Calcutta	34,639·00	1,20,061·00
9. Receipt by CRIH, Calcutta on account of pay & TA advance (undisbursed) in r/o Shri M.S. P. Panickar on his transfer to Kottayam.		925·00
10. Undisbursed final papment of CPF in r/o Shri B.N. Halder in CRI, Calcutta		72 00
11. Diet Charges recovered by CRI, Calcutta from NIH		8,000·00
TOTAL Rs.		34,59,876·46

Sd/-
(G.R. Jain)
Accounts Officer

Sd/-
(DR. V.T. Augustine)
Director

Payment			*Amount*
(*c*) Insurance	120·00		
(*d*) Scooter Advance	600·00		
(*e*) Flood Advance	185·00		9,196·00
Payment of Income tax			3,851·00
Credited to CPF account			1,19,142·00
Closing Balance :			
(*a*) Imprest		13,450·00	
(*b*) CCRH/Hqs		4,06,596·72	
(*c*) Closing balance of CRI, Cal.		84,460·89	5,04,507·61
TOTAL Rs.			34,59,876·46

Sd/-
(DR. V.M. Nagpual)
Research Officer (Hqs.)

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY GHAZIABAD

Income and Expenditure Account for The Year 1980-81

Expenditure			*Amount*
Plan :			
Pay and allowances		8,82,431·85	
T.A.		8,173·90	
Contingency :			
Wages	19,185·10		
O.E.	1,28,878·14		
Provers	3,896·95		
M.S.	1,04,595·82		
Rent	47,254·79		
		3,03,810·80	
Non-plan			11,94,416·55
Pay		9,60,666·41	
T.A.		24,788·29	
Contingency :			
Wages	24,822·15		
O.E.	2,02,951·24		
Provers	16,790·02		
M.S.	39,784·03		
Rent	58,644·00		
		3,42,991·44	
Excess of income over expenditure			13,28,446·14
			1,42.970 51
		TOTAL Rs.	26,65,833 20

Sd/-
(G.R. Jain)
Accounts Officers

Income			*Amount*
1. Release of grant by MHFW :			
Plan :	14,08,000·00		
Less : Adjusted	33,000·00		
		13,75,000·00	
Non-Plan :	14,82,000·00		
Less : Adjustment	32,000·00	14,50,000·00	
		28,25,000·00	
Less : Assets created during the year 80-81		1,83,644·51	26,41,355·49
2. **Misc. Receipts :**			
(*a*) Int. on FDR's		7,730·12	
Less : Adjustment already made in 1979-80		1,687·76	
		6,042·36	
(*b*) Int. on advance		38·70	
(*c*) I.P.O's received with application		3,569·50	
(*d*) Forfeited CPF contribution		966·00	
(*e*) Misc. receipt.		5,861·15	16,477·71
3. Diet charges recovered by CRI, Calcutta from NIH, Calcutta			8,000·00
		TOTAL Rs.	26,65,833·20

Sd-
(DR. V.T. Augustine)
Director

Sd-
(Dr. V.M. Nagpaul)
Research Officer (HQS)

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

Balance Sheet For The Year 1980-81

Liabilities			*Amount*
1. Capital Fund :			
Opening balance		24,49,113·06	
Added assets during the year		1,83,644·51	
			26,32,757·57
2. Excess income over expenditure			1,42,970·51
3. Amount due to CPF :			
Opening balance		6·00	
Less : Credit during the year		919·00	
			925·00
4. C.D.S. of staff :			
Opening balance		15·00	
Less : Paid during the year		15·00	
			—
5. Security of contractor		300·00	300·00
6. Liabilities with CRI (H)			
Decentralised Unit :			
Pay & T.A. advance in r/o Shri M.S. Panicker		925·00	
CPF undisbursed in r/o Shri B.N. Haldar		72·00	
			997·00
7. C.P.F. :			
I. (1) Opening balance as per last balance sheet			5,82,513·76
(2) Due from Council for Council contribution Interest etc.			
(*a*) Interest		46,421·00	
(*b*) Contribution		70,781·00	
		1,17,202·00	
II. *Less* :			
(*a*) Excess credit of Bonus during the year 1979-80		98·00	
(*b*) Excess credit of Council contribution during 1978-79		361·00	

Assets			*Amount*
(A) 1. Closing balance of Hqs. with Bank		4,06,596·72	
2. Closing balance of CRI, Cal		84,460·89	
3. **Imprest :**			
Opening balance	11,850·00		
Added during the year	1,600·00	13,450·00	
			5,04,507·61
(B) **Assets :**			
Opening balance		19,68,296·13	
Added during the year		1,83,644·51	
			21,51,940·64
(C) **Cont. Advance :**			
Opening balance		2,276·00	
Adjusted		2,276·00	
			—
(D) **TA/LTC (As per annexure)**			
Opening balance		2,440·00	
Added : during the year by CCRH		24,178·85	
Added : during the year by CRI		512·00	
		27,130·85	
Less : Adjusted		20,985·00	6,145·85
(E) **Festival Advance :**			
Opening balance		9,440·00	
Added during the year		13,200·00	
		22,640·00	
Less : Adjusted		15,420·00	7,220·00
(F) CPF advance suspense to be cleared by CRI, Calcutta			2,544·00
(G) **Flood Advance :**			
Opening balance		3,500·00	

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

Balance Sheet For The Year 1980-81

Liabilities			*Amount*
1. **Capital Fund :**			
Opening balance		24,49,113·06	
Added assets during the year		1,83,644·51	
			26,32,757·57
2. Excess income over expenditure			1,42,970·51
3. **Amount due to CPF :**			
Opening balance		6·00	
Less : Credit during the year		919·00	
			925·00
4. **C.D.S. of staff :**			
Opening balance		15·00	
Less : Paid during the year		15·00	
			—
5. Security of contractor			
6. Liabilities with CRI (H)		300·00	300·00
Decentralised Unit :			
Pay & T.A. advance in r/o Shri M.S. Panicker		925·00	
CPF undisbursed in r/o Shri B.N. Haldar		72·00	
			997·00
7. **C.P.F. :**			
I. (1) Opening balance as per last balance sheet			5,82,513·76
(2) Due from Council for Council contribution Interest etc.			
(*a*) Interest		46,421·00	
(*b*) Contribution		70,781·00	
		1,17,202·00	
II. *Less* :			
(*a*) Excess credit of Bonus during the year 1979-80		98·00	
(*b*) Excess credit of Council contribution during 1978-79		361·00	

Assets			*Amount*
(A) 1. Closing balance of Hqs. with Bank		4,06,596·72	
2. Closing balance of CRI, Cal		84,460·89	
3. **Imprest :**			
Opening balance	11,850·00		
Added during the year	1,600·00	13,450·00	
			5,04,507·61
(B) **Assets :**			
Opening balance		19,68,296·13	
Added during the year		1,83,644·51	
			21,51,940·64
(C) **Cont. Advance :**			
Opening balance		2,276·00	
Adjusted		2,276·00	
			—
(D) **TA/LTC (As per annexure)**			
Opening balance		2,440·00	
Added : during the year by CCRH		24,178·85	
Added : during the year by CRI		512·00	
		27,130·85	
Less : Adjusted		20,985·00	6,145·85
(E) **Festival Advance :**			
Opening balance		9,440·00	
Added during the year		13,200·00	
		22,640·00	
Less : Adjusted		15,420·00	7,220·00
(F) CPF advance suspense to be cleared by CRI, Calcutta			2,544·00
(G) **Flood Advance :**			
Opening balance		3,500·00	

Liabilities		*Amount*
(c) Excess credit of Council contribution during the year 1979-80	22,661·00	
	23,120·00	94,082·00
III. Staff Contribution		1,19,142·00
IV. Int. credit on saving Bank		2,570·11
		7,98,307·87
V. Less Amount paid		
(a) Temporary advance to staff		34,978·00
(b) Refund of interest to General Account		4,257·87
(c) Refund to General on a/c wrong credit of Festival Advance etc. recovery to CPF		
(d) Final paymentto Staff		3,300·00
		9,684·00
		52,219·87
		7,46,088·00

Assets		*Amount*
Less : Adjusted	3,425·00	75·00
(H) **Int. due on CPF A/c but not recd.**		
Opening balance	1,687·76	
Less : adjusted	1,687·76	
(I) **Scooter Advance :**		
Opening balance	7,200·00	
Added during the year	12,550·00	
	19,750·00	
Less : Adjusted	2,400·00	17,350·00
(J) **Cycle Advance :**		
Opening balance	123·00	
Added during the year	2,475 00	
	2,598·00	
Less adjusted	1,253·00	1,345·00
(K) **Telephone Advance :**		
Opening Balance	2,000·00	
Added duri g the year	10,000·00	
	12,000·00	
Less adjusted	2,000,00	10,000·00
(L) **Franking Machine Advance :**		
Opening Balance	600·00	
Added during the year	—	600 00
(M) **Advance to CPWD, DAVP**		
Opening balance	25,000·00	
Added during the yeor	—	25,000·00
(N) **Advance to CPWD, CRI, Calcutta**		
Opening balance	8.093·86	

Liabilities	*Amount*

Assets		*Amount*
Added during the during	—	8,093·86
(O) **Suspense account with CRI, Cal.**		
Opening balance		2,159·12
(P) **Postage Advance :**		
Opening balance	48·40	
Added	—	
	48·40	
Less adjusted	48·40	—
(Q) **Pay Advance :**		
Opening balance	—	
Added	1,485·00	
	1,485·00	
Less adjusted	530·00	955·00
(R) **Alcohol advance to CRU, Varanasi :**		
Ogening balance	—	
Added	600·00	600·00
(S) **Advance to PWD, Kottayam :**		
Opening balance	—	
Added	28,060·00	28,060 00
(T) **Advance for shifting to SMPU, Ooty :**	—	
(Added) Opening balance	10,830·00	10,830·00
(U) **Advance for Jeep to Kottayam :**		
Opening balance	67,997·84	
Adjusted	67,997·84	—
(V) **Petrol Advance :**		
Opening balance	—	
Added	524·00	524·00

Liabilitis	
TOTAL	35,24,038'08

Assets				*Amount*
C.P.F.				
I. Opening Bank Balance		1,32,513'76		
II. Added				
(*a*) Council Contribution		85,000'00		
(*b*) Int. recovered on saving bank a/c		25,70'11		
(C) **Subsecription**				
(*i*) Headquarter	84,503'00			
(*ii*) CRI Calcutta	34,639'00			
	1,19142'00	1,19,142'00		
		3,39,225'87		
III. **Less drawn from**				
(*a*) Investment	1,55,000'00			
(*b*) For Temporary Adv. to staff.	34,978'00			
Refund of Int. on saving bank a/c to Gen. a/c	4.257'87			
(*d*) Refund of amount of festival adv. etc. wrongly credited to C.P.F.	3,300'00			
(*e*) For final payment	9,684'00	2,07,219'87	1,32,006'00	
IV. **Investment**				
Opening Balance	4,50,000'00			
Added during the year	1,55,000'00			
	6,05,000'00		6,05,000'00	
V. Amount due from the General Account on short credit of Contribution & Int. due to CPF			9,082'00	7,46,088'00
			TOTAL	35,24,038'08

AUDIT CERTIFICATE

I have examined the accounts and the Balance Sheet of the Central Council for Research in Homoeopathy, Ghaziabad for the year ending March, 1981 and obtained all the information and explanations that I have required and I certify; as a result of my audit that in my opinion these accounts andt the Balance Sheet are properly drawn up so as to exhibit a true and fair view of the state of affairs of the Central Council for Research in Homoeopathy. Ghaziabad according to the best of my information and explanations given to me and shown by the books of the organisation.

Sd/-
(S. Balachandran)
Accountant General U.P. II
Allahabad

LIST OF ASSETS FOR THE YEAR 1980-81

S. No.	Description	Land and Building	Furniture and Fixture	Office Eqaipment	Vehicles	Books	Mach. & Hosp. equipments	Investment	Total
1.	Opening Balance	—	5,79,778·43	3,49,711·31	1,25,446·38	1,39,829·03	7,73,530·98	—	19,68,296·13
2.	Addition during theyear 1980-81	—	24,024·21	36,841·34	—	66,457·87	56,321·09	—	1,83,644·51
	TOTAL :...	—	6,03,802·64	3,86,552·65	1,25,446·38	2,06,286,90	8,29,852·07	—	21,51,940·64 ~~21,51,94·64~~

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

DETAILS OF ADVANCE 1980-81

Sl. No.	Nature of Advance	Opening Balance	Granted during the year	Total	Recovered	Balance	Memarks
1.	TA/LTC/Encephitis	1,640·00	—	1,640 00	1,640·00	—	
2.	Flood Advance	3,500·00	—	3,500·00	3,425·00	75·00	
3.	Festival Advance	9,440·00	13,200·00	22,640 00	15,420·00	7,220·00	
4.	Cycle Advance	123·00	2,475·00	2,598·00	1,253·00	1,345·00	
5.	Scooter Advance	7,200·00	12,550·00	19,750 00	2,400·00	17,350·00	
6.	Telephone Advance	2,000·00	10,000·00	12,000 00	2,000·00	10,000·00	
7.	Franking Machine	600·00	—	600 00	—	600·00	
8.	D.A.V.P.	25,000·00	—	25,000·00	—	25,000·00	
9.	T.A.	800·00	15,327·00	16 127·00	15,307,000	820·00*	*Dr. S.K. Ghosh, Ledger Page No. 212
10.	Contingent Advance	2,276·58	—	2,276·58	2,276·58	NIL	
11.	Postage Advance	48·40	—	48·40	48·40	NIL	
12.	L.T.C.	—	8,851·85	8,851·85	4,038.00	4,813·85**	**Page 213, Dr. S.K. Ghosh 800·00
13.	Petrol Advance	NIL	524.00	524·00			P.C. Mal 2.650·00
14.	Pay Advance	NIL	1,485·00	1,485·00			S. Das 1,338·00
15.	Advance granted by C.R.I. Calcuttato Sh. Panicker	—	512·00	512·00			Babul La' 115·85
							4,813.85
16.	Advance for Alocohol to CRU, Varanasi	—	600·00	600·00	—	524·00	NIL
17.	Advance to P.W.D., Kottaym	—	28,060·00	28,060·00	530·00	955·00***	***S.K. Ghosh 680·00
18.	Shifting Advance to S.M.P.U.	—	10,830·00	10,830·00			M.S.P. Panicker 275·00
							955·00
					—	512·00	
					—	600·00	
					—	28,060·00	
					—	10,830·00	
	TOTAL :	52,627·98	1,04,414·83	1,57,042·85	48,337·98	1,08,704·85	